





धान्यनाथपत्रमस्त्रिगुणग्रापाइत ४ ॥ जें स्वाहादिव्योद्यमिद्वोद्यमानवोद्य
गुननकथयामिनम ४ ॥ जें स्वाहासर्वगुनसुखयामि २ ॥ ॥ हागपातन
पत्रिवाननर्थ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ॥ ॥ हागपातन
किनीपुरुषरुहसुखयामि ४ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ॥ ॥ हागपातन
वक्ताग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ४ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ४ ॥ ॥ हागपातन
सुखनर्थ ३ ॥ ॥ उगवधुननर्थ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ४ ॥ ॥ हागपातन
नर्थ ४ ॥ ३ ॥ हागपातनसुखननर्थ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ४ ॥ ॥ हागपातन
सायथांसवाहनांसपत्रिवाननर्थ ॥ जें श्रीग्रीष्मिनाज्ञायरुववक्ता ४ ॥ ॥ हागपातन

॥ ॥ माहनीसगुलविज्ञानयाय ॥ अमुयरुट ॥ धर्ककतन ॥ काकाय
मगुलमाहनीआय ॥ दवयातयतसिधनमोहेनीमगुलकाय ॥ ॥
अमुयरुट ॥ धर्ककलविसर्जनयाय ॥ दवअहिखकयाय ॥ ॥ श्री
पाशकायदेवयनुमात्राकनदूयकावलसिसरुतिवातय ॥ जेहगवति
गामहातिप्रसून्दरीदविगुषपनादुखाधस्त्राह ॥ ॥ हवथंगुन
पाशवगुननययायगुनयातदकितीसभतनविय ॥ गुनमइसाल
खसलूयथातसेराकपूस्यतय ॥ ॥ हागवागुन ॥ जेहसंगसय
विशोनां ॥ त्यादिनपविवातनयौधयायहवयाथ ॥ हागपाश

वसिसलूयहाकपूस्यतयहवथातस ॥ ॥ दवागीर्वादे ॥ कडादे ॥ जे
दहिलक्ष्मीधनेधन्यनाथलक्ष्मीपूनायुष ॥ एसादेकनमदेवि.सून्द
नी.पनमभ्यनी ॥ कतननमस्कारयाय ॥ ॥ वलाहनकाबहुमामु
तियाय ॥ त्वंदवीसर्वहगानांत्वंगतिस्त्रययाय ॥ त्वमाहोपन
ममनि.त्वंदवीगवर्धमम ॥ ॥ थनकायादाव ॥ नवनागुकलसने
वनागुविसर्जनयाय ॥ कडादे ॥ मसूरुनअमुयरुट ॥ कतदंसहा
नमूडावविसर्जनयाय ॥ कलगकाकायधलेखनगामूदवीउगुव
अदवीआदियाकेअहिखकयाय ॥ मूलमनुवाधन ॥ नवना

गृहान कायं सकल सै ॥ ॥ न्यासया दंडवति विसर्जने ॥ ॥ अमुं यदं रं हान
 मूडानं गविका पूजा ॥ ॥ कं स्वांताय दंडवति विसर्जने ॥ ॥ गंगे गङ्गा यत्र
 स्नानं स्नानं गङ्गा पूजितं । संवत्सनं वा नीतं दुःपूनं नागमनं कृ ॥ ॥
 गृहगवति ग्रीमहा विपुसुन्दरी द वि यथा गङ्गा पूजिता सिकुमस्य पुसा
 द ॥ कं नन ॥ सै हान मूडानं दव या क वा द स्वान काय गि न स द द य स
 थिय कं ननु दंडवती थव कली नया य ॥ ॥ श्वस्नानः श्री गान काय सु प्रिका
 वा क याय कं नय (थन याव पूजा ॥ ॥ जी नि मो ल्य वा सि न्ये न म ॥ ३ ॥ ॥ द्रु
 सकन थव द्धवनं नय ॥ ॥ द्रु सकन सै लं खरु नित्य ॥ ॥ थवन न ना ग क ल ग
 १ मूलं कन समुत्पन्नं अथ कल यां ९

यात्रे स्नान मूलन हाय धा १० ॥ भव सकल हाय ॥ ॥ मृत्पूजय कल ननं ॥
 अरि श्वं कं ॥ अस्मात्मात्र दी य म हा द ग मी पूजा क र्म नि अरि थ क स मू द्रु
 ममु ॥ गंगा दि ग रि ने ८ पू र्ण गन्ध क न न य न्न वे ८ ॥ गन्धा द म रि वि ध्या मि
 गदा पि ह वि ता ग नं ॥ ॥ वन सि न्द्र न न ति य ॥ च न्दनं स पि नं पू र्ण प दि
 नं या य ना ग नं । आ य दं क र न नि र्ण स श्री स न्क ति व र्द्ध नं ॥ ॥ भा द नी
 ॥ क रू लं च क रू मा हा र्णं । सर्व मा ह न का न कं । भा द नी पु नि मृ दू र्वं सर्व का
 र्य पु मा ध नं ॥ ॥ स गु ण ॥ इ र्वा च न्दन पू ष्पा ल्पि द ध्रु के न स म न्ति र्त्तं ।
 गृ क तां स गु णं । भा रं । सा ध नं सर्व क र्म सु ॥ ५ ॥ द व या । द्वा क न क न दं
 १ आ सा श्री वा द ॥ १

स्नानकाकायनवनत्वांसहितनथवनंकाय सकलसंविद्यमसुउय
वधुम्रादिसया २ गुलिवाकावस्नानविय ॥ ॥ कनदकमहेविसर्ज
नं ॥ जमुसुभ ॥ ॥ गृह्णामिधकं कमु काय भक्ति या न द र्म नया
सं हार्यथ मनु ॥ ॥ सं बरु का ला मि म नू ला म क र्मु नू प ह वि र्ग
उं नू नू ना म वी जी व भ त टं जा या न न म ४ ॥ ॥ भक्ति विय का
या डा द र्म नया य भिन स गु नू र्थ न नू ग ल स मूल र्थ न या द
स्नानकाय सकलसं विद्य ॥ ॥ खलु स क न द का या व र्थ क

दिके मयं स्वायवाइन र्वं मित्रसं मी ला हा न स स्व सिक था य दा रा
स र्वा श्रु क न न या व ख लु हा य ॥ ॥ मनु ॥ ॥ इ र्ग र्ज र्वा ती नू धा
नायां स र्व भि कू र्थ क र्वा भि न्ना मु र्ज र्थ द हि उ ग र्वा न मा म्नु
र्ग ॥ ॥ खलु स ॥ र्व न सिं ध न स गु ल न न व क ॥ नू व सिं ध र्वा स्वा
न काय ॥ सक र्म र्व न स गु ल स्नान विय ॥ ॥ थकादि कु म ल ॥
थापित भक्ति या न त व हा य ॥ ॥ न्या स लि का य ॥ नि त ल न
ना सिय ३ ॥ धान मनु र्थ र्थ सूर्य सा क्रि था य ॥ ॥ रा न दा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
नदीयमहादममीपार्वत्युग्रसुखदवतादिउग्रवधुं संपूर्ण
भक्तिरुक्तकर्मसाक्षि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ पूर्वनिर्देशः ॥
॥ ॥ दिगम्बरावहायूरुसितय ॥ धर्ममूलरुतिपावनयाय ॥
वलासलावर्कगमनयाय मनुः ॥ भस्वदिगङ्गाताडाखदीकस
यनागच्छे ह्येतां ॥ जंगमनी चार्थनाराय ॥ कमायवनादायव ॥ भ
क्त्यक्तविनाशाय ॥ पूननागमनायव ॥ भक्त्यक्तविनाशाय ॥

स ॥ ॥ सिंहातायथवरथायसंभान ॥ ॥ स्वस्तिकायत्वायद्रव ॥
उद्देश्यं सर्वभूतहिते रतः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥ ॥ पगन्नामुक्तयंदहिउग्र
वधुं नमो भगवते ॥ ॥ स्वस्तिकायत्वायद्रव ॥ ॥ मृत्पुष्पकलेन
यालंखनदायसंकलं ॥ जंगमदीगलिने ॥ पूर्वगन्नामुक्तयंदहिउग्र
गमनादमहाविष्णुमि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ यत्तसिन्दूरनिय
॥ जेवन्दनं लघिर्नयूनी ॥ पविर्नय ॥ यत्तसिन्दूरनिय ॥
श्रीमन्नक्तिवर्द्धनं ॥ ॥ भगुधननिय ॥ ॥ जेवन्दनं लघिर्नयूनी ॥
यत्तसिन्दूरनिय ॥ ॥ भगुधननिय ॥ ॥ जेवन्दनं लघिर्नयूनी ॥

लेनमः दुर्गमये ॥ अथ पुण्यालम्बुविधिः ॥ ॥ दममीर्षनिकुङ्कुमाक
नित्यार्चनादिधनकः ॥ ॥ पूजाथामवकावमालकनाललाचकः ॥
पापवलिवायसूयोर्भस्वसूयवाजवाय ॥ स्नानयाचकदेव ॥ च
न्दनादिरेवले ॥ पूजाक्रियकाव ॥ गिरह्वननासिय ३ ॥ ॥ अद्या
दि ॥ सूर्यार्घ्याय ॥ वाक् ॥ लानदाङ्गागुणी ग्वेनदासः सर्वगः
रुयधनादिजयपादिकामः ॥ भानदीयपुण्यालम्बुग्रीवैरुदेवता
दिउग्रचण्डपूजानिमित्थं कर्तुं श्रीसूर्याय अर्घनमः ॥ पूर्ण २ ॥

॥ ॥ गुननमस्कारैः ॥ नित्यं पूजाकर्म ॥ याः अर्घास्त्वायन आसनस्त्वा
यनरुग्गुहियानाममृषादिकप्रषउद्गमासः ॥ भस्वस्त्वा
यनप्रवामुद्विस्मयादिभुद्वि ॥ श्रीपाणस्त्वायनं ॥ तर्पणं ॥
आसनपूजा ॥ ध्यानं ॥ आवाहनपाद्यादिधूपदीपनैवद्यपूजना
वमर्न उषवानर्धमूलपूजा ॥ पत्रिवानपूजा ॥ ॥ उग्रचण्ड
पूजा ॥ आसन ॥ आन आवाहनादिउषवानपूजा ॥ अयाभूति
वलिमूडा ॥ पत्रिवानपूजा ॥ कात्यानीर्गुवृत्रध्वनीपूजा ॥ दंगुलि
हीमभनपूजा ॥ र्थसात्रमाकपूजा ॥ ॥ महाकाव ॥ रुग् ॥ वाम

पु। पूजा ॥ वलिमूल ॥ वनस्नानपूयदीपनेष्ट्यादिमुखगुहिन
त्यम् ॥ पूननाचमन ॥ पुतिष्ठा तयदान ॥ ॥ जप ॥ स्नान ॥ सम
यक्काय तर्पण ॥ देवाभीर्वादि ॥ आत्मोभीर्वादि ॥ न्यासलिकाय ॥
वलिदेवविसर्जनमायमभव ॥ आवमन ३ ॥ सूर्यसाकि ॥ वाक्
कवया ॥ ॥ ॥ हानदा ॥ गणपति ॥ भवदीय ॥ पुष्टानेष्ट्यादि ॥
सुदेवतादिदुग्धपूजासीपूजार्थकृतकर्मसाकिष्ठाभीसूर्याय
ज्यैष्ठ्यनमः ॥ पूर्य २ ॥ पिडाडायवन्दनादिस्नानसमयकायसकल

विश ॥ होतर्न ॥ नृतिपुष्टालम् पूजासमाप्ता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगुरुस्नानमः ॥ धनसन्निकृष्टपूजायाय वनस्नानआदिमाल
कखलवलिहर्तमाल ॥ आवमन ॥ ३ ॥ सूर्यसाकि ॥ वाक्
कवया ॥ ॥ यजमानस्थितिपुष्टालम् गणपति ॥ सुदेवता ॥ पुष्ट्यादि ॥ ॥ अ
र्घ्योष्ठायनादि ॥ आनादिपूयदीप ॥ जप ॥ स्नान ॥ तर्पण ॥ भीर्वादिन्या
सलिकाय वलि विसर्जनमाय ॥ देवविसर्जनमभव ॥ आवमन
सूर्यसाकि ॥ वाक् कवया ॥ ॥ यजमान ॥ नृतिपुष्टालम् पूजन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

२८ म० श्रीचण्डिकायै ॥ अथ वरुथी पूजा विधिः ॥ ॥ निष्ठा चैनादि मा
लक धूनक ॥ मालका गाल लावक ॥ वलि पात १ वाय ॥ ॥ देव स्नान
पश्चात् मृत्तुलि स्नान यावक ॥ वन्दनादि सिंदूर भक्त जज्ञ का स्वा
न आदिन मालका खेले ॥ ॥ जल (गंधन) ॥ गितन नासिय ३ ॥ ॥ सु
यार्थ ॥ अथ गि ॥ रात्र द्वाज (गात्र) अमक दासः सर्वग कुक्षय धनादि
जय प्राफिका मः साव दीय खड्ग गृह रत्न वरुथी कर्म श्री स्वयं देव
तादि उग्र वधु दवा चैत कर्तुं श्री सूर्याय अर्घ्य नमः ॥ पूर्य नमः ॥ ॥ न

वना गु (गंधा) कूट पूजा या दा (थं) याय सलायनं भव ॥ वलि मूल ॥ धूयः
दीयने वयं नये न पुतिष्ठा ॥ जय ॥ भ्रातृ पर्यंत मालका याय ॥ ॥ स
मय वा कन काय ॥ नये न याय ॥ मूल उग्र वधुः य विवात्र र्त्त ॥ ॥ दे
वा भीर्वा द ॥ वन्दनादि देव या न काय ॥ ॥ आत्मा भीर्वा द ॥ अहिष कं ॥
वाक् ॥ अहिष कसु मद्रु मद्रु ॥ भ्रातृ कसु कया वान ॥ दम मी या सु गु व मा
रु नी न य माल ॥ थ म आदि सु क सु न वक ॥ ॥ कर्तन ॥ स्नान का चैतः
य ॥ कृय भव सु कल सु आगी वीद विय ॥ गी पा गुरु मन याय ३ ॥ ॥

न्यासलिकाय ॥ थलुलदव खलुलु विसर्जनं ॥ कं स्वांताय सकल स्य
 नं कर्नं वा न ॥ मं वनदव या स्नान कायी व व ल स त न कं ॥ वाक् ॥ उं ग
 क ग क मा हा द वि. स्व स्व स्नानं ग ताल यं ॥ न क न क म ह ग न नि प न मा
 ग म ना य च ॥ मूलं र ग व नो ग्री म हा नि प न स न्य त्री द वि उ ग व लु द
 वि य थ ग कि पू जि ता सि क म स्य पु सी द ॥ कं न न ॥ सं हा न मू द्वा ण व लि
 (थय द व या क वा द क्ष न न न या स्नान का य नू ह स थि य कं गि न मं थि
 य कं न तु दं थ व कं द व ली न या य ० ग न स वा य क्क व या (थं नि मी ल्य

पूजायाय ॥ ॥ उ ग व लु ख लु कं स न कं पि य कं मा ल ॥ ॥ गं स्या लं ख
 न थ म हा य ॥ गी प ण का या डा स्त्री क न या य ॥ ना वू य ॥ न्या सा च म र्त्त ३
 सूर्य सा दि ॥ क्ष व म लु त (थ ल ॥ अ र्घ्यं स व सि स लं ख न य ॥ व न कं स्व अः
 र्घ्यं स न या डा जा दं वा न ॥ वा क्क द व या (थं ॥ सा न दी य र व द ग ह र उ न व
 तु र्थी क मी ल्य स द व ना दि ॥ उ ग व लु द व य न स पु र्णु र्थं कृ त क मी ण सा
 कि (व गी सं र्थी य अ र्घ्यं न म ॥ ॥ पृ र्थं न म ॥ ॥ ॥ कृ तिल द र्ग नं ला य
 मा ल ॥ कं ठि ल सु वा द सि नू व द्वा हा स्वां का य नि य क्क य ॥ सक ल कं

गी

विषमाल ॥ स्वस्ति धाम्यथ संनय ॥ ॥ वलिवाय ॥ ॥ चिदनेव या ॥
दी कामदूशकस्तु अलिषक वन्दन सिन्दूरन तव कस्वान विरय ॥
समय विरय ॥ ॥ धनैलिहो जन याय ॥ कलकन ॥ ॥ किमान
दी यवतुर्थी कर्म पूजा समाप्ता ॥ ॥ सीरले ए अक ॥ ५ सं पू ॥ ॥ गुरु ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ रत्नचतुर्दशी चर्चन पूजा विधिः ॥
मातृकाललावक ॥ स्नानादि चन्दना कन सिन्दूरज्जम स्नानादि ख
न ॥ ॥ सूर्यार्घ्य ॥ वाक् ॥ अर्घ्यादि ॥ यथा ॥ गन्तुं मिथ्या गममाकुरु
लप्राप्ति कामा रत्नचतुर्दशी चर्चन पूजा कर्तुं ग्राह्येय
अर्घ्य २ ॥ पूर्य २ ॥ ॥ गुनमस्तु ॥ गण गुनमूलनमस्कान ॥ हन
गुद्विप्राणमया मम श्यादिक न स द जन्यामः ॥ ॥ जल पा गा घृ पा गु
पूजात्मपूजा न ॥ ॥ यथापद ॥ मनमूल पूजन ॥ ॥ तत्तत्तत्

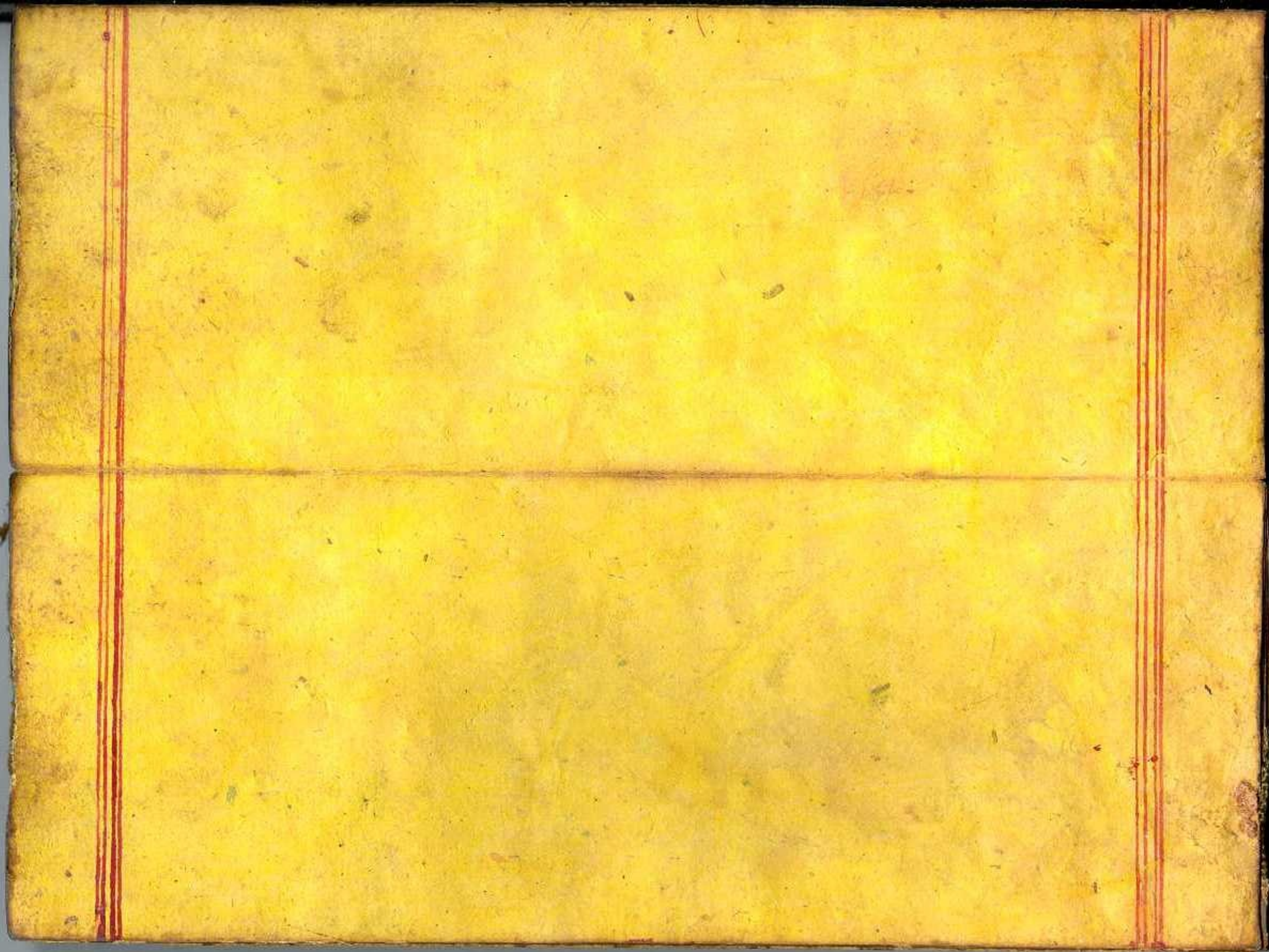
ॐ नमः वाग्मते नमः ॥ नाभिकुलसमदूते रुद्रकण्ठादिनिभृते ॥ वाग्मती निष्कृता देवि जल
मूत्ये नमोस्तुते ॥ १ ॥ रुद्रवृडामने दूते योगेश्वरी प्रयाविणी ॥ मनिमती त्रिविख्याता जलमूत्ये न
मोस्तुते ॥ २ ॥ देव्युवाच ॥ रुद्रयासे भवे गंगे स्नपार्थं श्रीनरो ॥ रुद्रधारे त्रिविख्याता
जलमूत्ये नमोस्तुते ॥ ३ ॥ सकागं त्रिभिधा भित्वा युववादे मदे श्वरी ॥ वाग्मती रुद्रधारे
तिमणी मतिं त्रिविभृता ॥ ४ ॥ नानारूपं धालिष्ये यत्तावत्तस्य रूपिणी ॥ बहु

मूत्ये महादेवी एकारूपे नमोस्तुते ॥ ५ ॥ वाग्मती वृत्तकक्षोले द्रुममयी निराश्रिते ॥ त्वयि नि
मज्जे कानाश्च यापकक्षोले संतर्दि ॥ ६ ॥ हे माभाये त्रिनेत्रायै सर्वालं कालशोभने ॥ व्याघ्रच
र्मयुवीताये च दानने नमोस्तुते ॥ ७ ॥ त्रिशूलं डमलुं मालायुक्तं किंप्रतिकले ॥ ईषस्मि
तानना देवि द्विभीभूतानमा म्यहं ॥ ८ ॥ सर्वयायेद्यरुलिण्ये सर्वदेवे नमस्कृते ॥ मरुयातक
नासिन्येवरप्रदेनमोस्तुते ॥ ९ ॥ त्रिथरूपे नदीनाश्च नयोनां सङ्गमो ज्वले ॥ देवीरूपे मरु

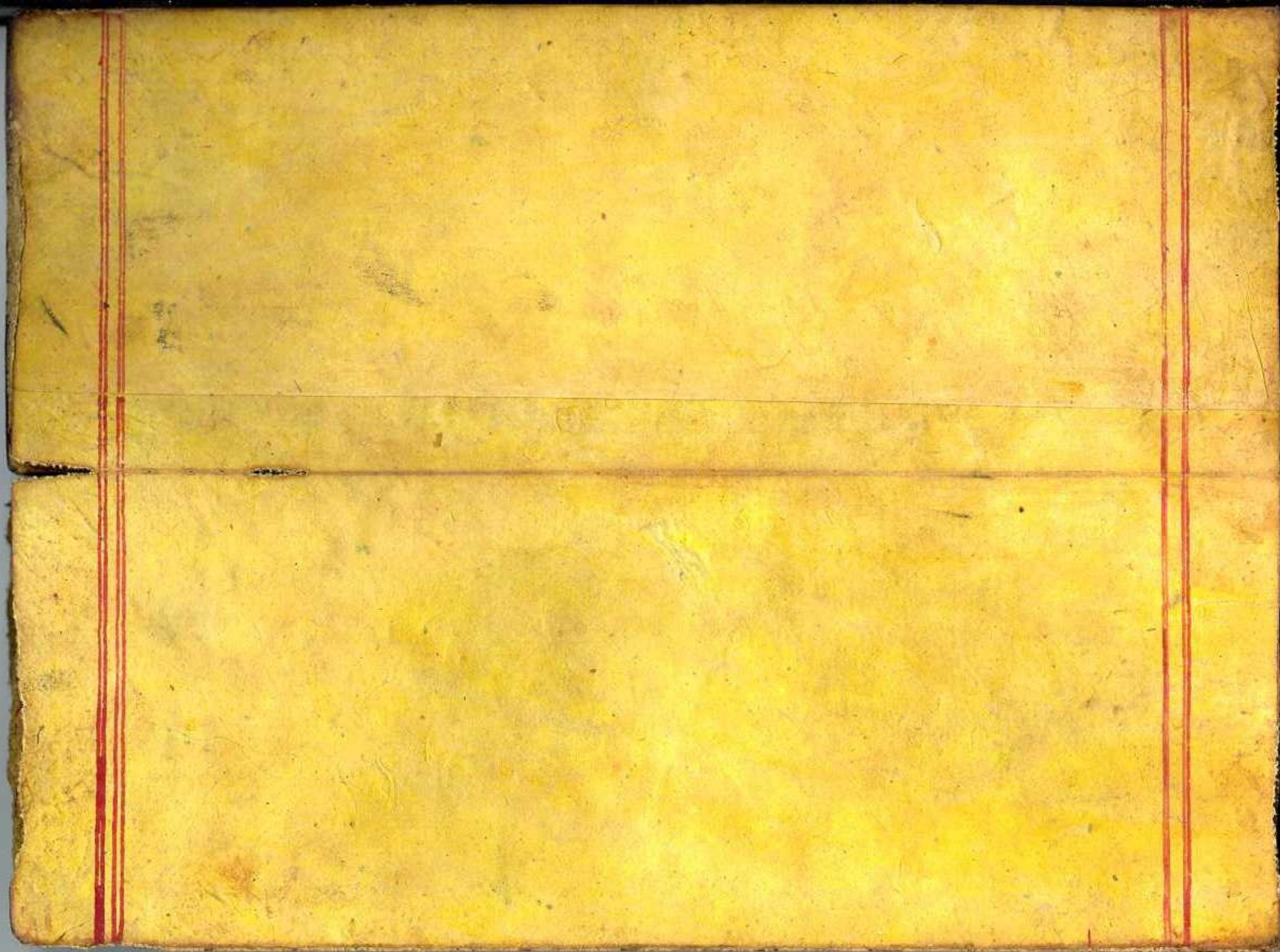
मूर्तिश्रगोचलेनमोस्तुते॥१०॥ब्रह्माववेष्टमवीरौदीप्तून्त्येतेतामदेध्वरी॥एतासांसरितांमूर्ति
स्ताभिराश्रुत्यसंवदेत्॥११॥वाग्मतीशिवगंगेचशिवेवृक्षशरस्वती॥दुर्गेभक्तानिस
र्वाणीउमेयंगोनमोस्तुते॥१२॥सिद्धिरिषिरूवाच॥एतैस्तेवैश्वसंस्तुष्टावाग्मत्यास
र्वयातकै॥सद्यवस्यसि सा चोसौमहायायै प्रमुच्यते॥१३॥स्नानकालेनलोभक्त्या
यः पठेद्वाग्मतीस्तवं॥वाग्मत्यां स्नानजयुं न्यं पाप्मोतिनीत्यपाठते॥१४॥संग्रामे

जयमाप्नाति यद्वयीडाविनश्र्याति॥कान्तामुत्रधनं चायुजसकीर्तिलभसदा॥१५॥यि
तस्त्रीवालगोविप्रवधयायै प्रमोचित॥सुवर्णोस्ते यदि थोक्रां भक्षस्व कृतकिल्बि
षै॥१६॥मुखदोषो ह वै यायै प्रमुच्यते न शंसय॥॥इति श्रीस्कण्डपुराणे हिमवतख
ण्डे संखमूलस्तीव्रम् समाप्ता॥शुभम् श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामशुभम्॥



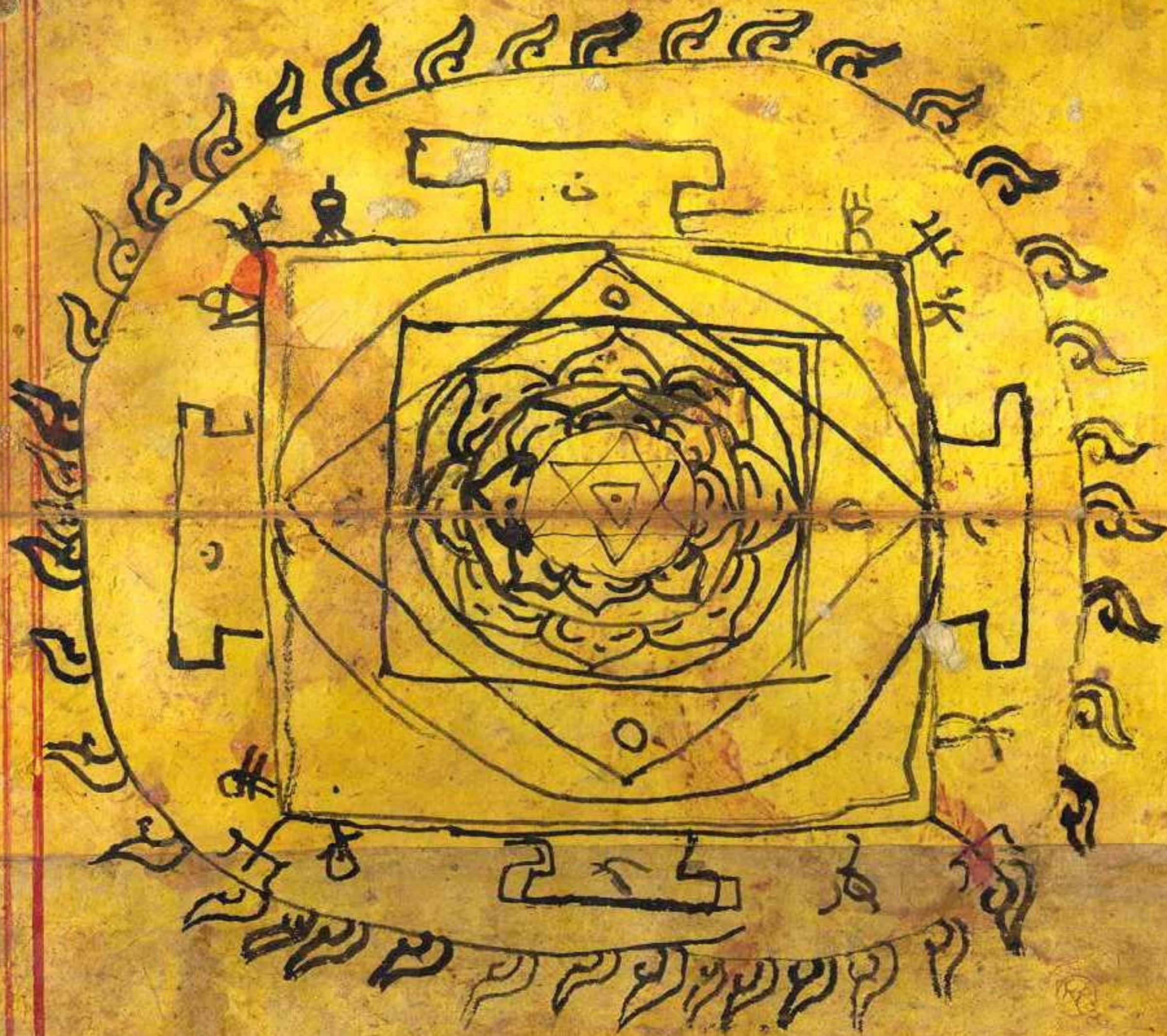














दिवा न वा य



क. श. सि



मधुयक राज
धन सायक जिरेउ

०
माह
नी
०
सगुलधो



कलम



महा
काल
वत्ति



ਪੰਤਿ



ककुया
सवलि



कृष्ण



था।था।था।
यि।यि।यि।
रं।धर्मं



थावि
कु
य
पानम्
मानम्
द्वि



मृषा विद्या न भय



五



ॐ



ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ नवनागमानविधि ॥ नासिय ३
 ॥ न्यासयाय ॥ ज्योत्स्नाय नयाय ॥ थलं खन समस्तं हाय ॥ नमः धर्मं कृष्णाय ॥ ॥
 मूलमनुष्यनयं लंखनहाय ॥ सिद्धन वसु, शिवा, वस्त्रा, वाक, यकथाय
 ॥ धनयूजा ॥ ज्ञानमः ॥ ज्ञानमः ॥ ज्ञानमः ॥ ज्ञानमः ॥ ज्ञानमः ॥ ज्ञानमः ॥ ध
 नधूनहाय ॥ हिलं खनहाय ॥ मूलमनुष्यनय ॥ जयनय ॥ वसु, शिवा, मूलम
 नुष्यनया ॥ पीकथाय ॥ नक्षत्रलंखनहाय ॥ मूलमनुष्यन ॥ नक्षत्रहाय ॥ मूलमनुष्यन
 धयादवन, हिनयूय ॥ थ, शिवा, वस्त्रा, वाक, यकथाय ॥ यूजायाय ॥ नैज्य
 रुद्र धर्म ३

मधुलायनमः ॥ ३ ॥ कलशकाया अमल ॥ ४ ॥ ज्योत्स्नाय रुद्र ॥ धूय कुरुय ॥ गोष
 द ॥ स्वय ॥ द्रुं ज्योत्स्नाय ॥ गलथागस, कुक्षलकानहिनयुले ॥ मूलमनुष्यनया
 ज्योत्स्नाय मूलमनुष्यनय ॥ यूजा ॥ ज्योत्स्नाय मधुलायनमः ॥ धनयूजायादा
 अलंखनय ॥ मूलमनुष्यनय ॥ थलं खन, गंगजल, यंचनल, लंखन, अहयल, लंखि
 का, वन, नक्षत्र, खान, उल, अलगन, पिलोष, दुर्वीन, ज्योत्स्ना, यालयकु
 कनहायनका, नय ॥ यूजायाय ॥ ४ ॥ शाममधुलायनमः ॥ ३ ॥ यूलानयूय ॥ न
 काननय ॥ मधुला, नय ॥ गंगजल, नय ॥ खान, ज्योत्स्ना, सिद्धन, नय ॥ वन ॥

सिद्धन्, दृष्टि, ऊजम, कर्तुं यथाय, यंच यथाय, अद्वा न ॥ वलि, यात्र, मालकावाय
 ॥ थन हिल हल वला माल साथन माल ॥ कृगन धि सीतय ॥ अद्य (अथ) व नारु कल्य
 वेव सन मने नये, कलियुग यथ मचन (अ) ऊमृद्वीय एव नख (अ) हिमवद क्रिषयो
 द, यष्टु यमि सन्निधान, वासुकि कृष्ण वाग्म्या द क्रिष कूल, श्रीमन् नयान द भर्गन ललित
 नारु देवयू धरु मो ॥ अद्यादि ॥ ॐ सिं धातु महादव, दवानां म नूजा धिय। यावद स
 प्रियं नं तावत्वं सिं न माचन ॥ ॥ एव द्वा ऊ (अ) गण समूह जू मूक नाम दास ४ सर्व
 धातु क्रय धना दि ऊय पाफि काम ४ भन दीय, पात्राय धे स्थायन चन स्थाय सि

नारु वल्लि न स्थाय च नारु व ॥ नाय हात ॥ नूनि सिं न हात ॥ ॥ ॥
 श्री गुरु न्या नमः ॥ न नाद व पूजनं ॥ स्नान, व, सांख्य न माल क नाल लाव क ॥
 ऊत (अ) धनं ॥ व, स्नान य ॥ नाक पूय ॥ श्री व न्नाय नमः ॥ ३ ॥ अत्र म नं
 जं अत न लाय स्वाहा ॥ श्री विद्या न लाय स्वाहा ॥ सो गिव न लाय स्वाहा ॥
 सूर्यार्घ्यं ॥ अद्यादि ॥ एव द्वा ऊ (अ) गण समूह जू मूक नाम दास ४ सर्व धातु क्रय ध
 ना दि ऊय पाफि काम ४ भन दीयं स्तु द व ना दि उ ग व धु पूजन क
 दुं गी सूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ पूर्य २ ॥ गुरु म पुल पूता ॥ नं गुरु न्या नमः

॥३॥ कतनं जायाव (ध) स्वार्नं कुर्य ॥ ॥ अर्घ्यो स्नानं ॥ वै स रि काल वा क
य के वाय (ध) पूजा ॥ जी आ धा न ग क्का दि ल्यो २ ॥ अर्घ्यो मं वि नार्प कुर्य
कं म भु ल स न य ॥ न म ४ ध कं लं ख न य ॥ नं ध कं व न स्या न न य ॥ अ क्क म
मू डा व ती र्थ वा ह न या य ॥ नं कों १॥ वं (ध) नू मू डा ॥ नं १० क य ॥ रु ३
ना ल गु य दि ग्व न्ध नं ॥ धु लं ख न हा य ॥ ॥ द्वा न पू जा ॥ नं जीं द्वा न द व ना
त्या न म ४ ॥ ३ ॥ आ स न स्ना य न ॥ ला सा या त ल स रि काल वा क वा य (ध) पू
जा ॥ जी आ धा न ग क्का दि ल्या न म ४ ॥ (ध) ला सा ना य ॥ (ध) रि काल वा य ॥
(ध) पू जा ॥ जी आ धा न ग कि क म ला स ना य न म ४ ॥ ॥ दि ग्व न्ध न या य

य ॥ क रं ख का या डा ॥ नं अ स्ना य रु ॥ वो दि ग र्से हा ल ॥ ना ल गु य दि ग्व
न्ध नं ॥ रु १० ॥ ॥ ग ल गु नू मू लं न म स्ना न ॥ ख व स ॥ नं गु नू ल्या न म ४
॥ न व स ॥ नं ग ल ष्ठ य न म ४ ॥ द धू स ॥ मू लं रि पू न मू न्द नी ष्ट द व ना य
न म ४ ॥ ॥ पा ष्ठ या मं ॥ ऊ न द्वा स ति य ख व न सा द का य ॥ नं १० ॥ न र्वा
ति ढं नं ॥ कीं ५४ ॥ ख व नं दं ऊ व न सा ना ल नं ॥ सो ३३ ॥ ध नं पा ष्ठ या
म ॥ ॥ पा ष्ठ प ति ष्ठा नू य थि र्थ नं ॥ जीं कीं कीं ॥ ३ ॥ हा थ दू ल य ॥
अ स्ना य रि पू न मू न्द नी म नू स्य ॥ मा ल स थि य ॥ द कि ल्म मू लि ष्ट य थ
न म ४ ॥ मू खं ॥ धं कि क न्द स न म ४ ॥ रु दि ॥ ग्री म हा रि पू न मू न्द नी

दवतायेनमः॥ युष्म ॥ जे वीजायनमः॥ पा० स ॥ कौंभकायनमः॥ सर्वा
मः ॥ सो कीलकायनमः॥ जाय ॥ ममचतुर्वर्गसाधनविनियोगः॥
कन्यामः॥ जे अरु साखानमः॥ कौं तर्कनाखानमः॥ सो मधुमाखान
मः॥ जे अनामिकाखानमः॥ कौं कनि साखानमः॥ सो कन तत्र पृष्ठा
नमः॥ ॥ जे हृदयायनमः॥ कौं गिरममने॥ सो गिरायनमः॥ जे कव
वायनमः॥ कौं नगुरयायनमः॥ सो अमुयरुद ॥ ॥ आत्मपूजनं ॥
वतनतिय ॥ जे वन्दननमः॥ अकननकय ॥ ~~अकननकय~~ ॥ स्वाने
सो पूष्यनमः॥ माठ सग्या मलि ॥ मूलंगामहा नियनसुन्दरीग्रीपा

दकांपूजयामिनमः॥ ३ ॥ ॥ ततः गंखस्कायनं ॥ खव सर्वसयकवाय ॥
थपूजा ॥ कौं आधारगस्कादिस्थानमः॥ म धिनां गंखसल रुट् धर्क ॥ मधु
लसतय ॥ पूजा ॥ हं सूर्य मधुलायनमः॥ लंखधन कौं धर्क ॥ वं स्वां अ
कततय ॥ नमः॥ धर्क ॥ कौं धर्क अरु मम डालगी थीवाहनयाय ॥ पूजा
॥ मं साममधुलायनमः॥ मस्तु मूडालपूयजे १० ॥ वं धन मूडाकन ॥ ना
सग्यादिग्धधन ॥ धन खन गायत्रीन सामगिसकलताकाय ॥ नूनि ॥ ॥
पूजाहन ॥ धन ॥ लंखनहाय रुट् धर्क ॥ पश्यंते ॥ यं ३ नं ३ वं ३ मू

समयतय ॥ नमः ॥ वस्त्रां श्रुत इत्येत ॥ पूजा ॥ सोऽं साममधुसायनम
॥ सां हृदयाय नमः ॥ सोऽं गिरिसर ॥ सुगिरिवाये ॥ सुकेववाये ॥ सोऽं
नगुणयाये ॥ सुऽं श्रुतये ॥ मूलनगाकपूय ॥ हं अवगुधने ॥ वं धन
मूडा ॥ सुऽं यानिमूडा ॥ हृद ॥ नातगुयदिग्वधन ॥ नृनिगीपागुहायने ॥
गुननयैर् ॥ जेऽं स्वाहालश्रुतनन्दनाथगोपुधुतश्रुतगोपाद्रकनिर्यया
मिनमः ॥ जेऽं स्वाहायत्रमगुनयनायत्रगुनयत्रमधिगुनसूर्ययामिनम
॥ जेऽं स्वाहासर्वगुनसूर्ययामिनमः ॥ नृति ॥ ॥ मूलनयैर् ॥ जेऽं श्रीं सोऽं

महाविपुलसून्दरी दवीगीपाद्रकां नय्यामिनमः ॥ ३ ॥ सुगोडयवकु
दवीं नय्यामि ॥ ३ ॥ ॥ आवाहनं ॥ जेऽं रुगवतीदवी आगच्छ ॥ न
मानमः स्वाहा ॥ कस्त्राधूं जादं न धूं वलिं स्वाय कस्त्रादवयाकनत ॥ ॥
मूलयाश्रुतनमूजने ॥ श्रीं यं श्रुतनायनमः ॥ श्रीं सिदानिवमहा
यनासनायनमः ॥ नृति ॥ ॥ इति ॥ ॥ इति ॥ ॥ इति ॥ ॥ इति ॥ ॥ इति ॥
वालाकं मधुलाहारां वगुधुदुशिलावनी ॥ पागमकगसरां ग्यार्थधनय
नीं गिरिवाये ॥ जवद्वासनपिकायावश्रुतसिद्धयाडावयाकनय

॥ अथ पुराणं नमः ॥ ॥ अथ वाहनादि ॥ ॐ श्रीं महाविष्णुसुन्दरीदेवि ॐ ह्रीं
 कृ २ ॐ हति २ ॐ हसं निदिता ह व २ ॐ हसं निद्रा ह व २ मम पूजां गृह्य
 ॥ अथ ॥ ॥ या एषाति सा देव थि स्थीत ॥ ॐ श्रीं कां सर्वत्रियालि ॐ द्या गत्य
 सुखं विवर्ति ॥ ३ ॥ देव या के न्यास क ल्य ना या य ॥ ॐ दे दे या
 दि स उ ह न ३ ॥ ह्रीं श्रव गु २ नं ॥ वं ध नू मू डा ॥ रुटे ३ ता ल रु या दि ग्व न्ध
 नं ॥ या नि मू डा ॥ ॥ या या दि उप चानू पूजा ॥ ॐ श्रीं सो ॐ न या य श्री म
 हा विष्णु सुन्दरी देवी नमः ॥ २ ॥ अथ श्री महाविष्णुसुन्दरी देवी २ ॥

धैर्य भाय ३

३ ॐ द मा व म ती यं ग्री म हा विष्णु सुन्दरी देवी नमः ॥ ३ ॐ द स्नानी यं ग्री म हा
 विष्णु सुन्दरी देवी नमः ॥ ॥ वन्दने ॥ ३ ॐ द वन्दनं ग्री म हा विष्णु सुन्दरी देवी
 नमः ॥ ॐ व ॥ ३ ॐ द न क वन्दनं ग्री १० ॥ ३ ॐ द म कृतां ग्री म १० ॥ ३ ॐ द सि
 द्धं ग्री १० ॥ ३ ॐ त स्युष्यं ग्री म हा विष्णु सुन्दरी देवी नमः ॥ ॥ घण्टा पूजा
 रुद्रं स्वन हा य ॥ नमः ॥ वं न स्थां त ॥ पूजा ॥ ॐ गज धनि मनु मा त स्वा हा ॥ ३
 ॥ रुद्र धूपं स्वन हा य ॥ नमः ॥ वं न स्थां त य ॥ वनू मू डा ॥ ३ ॐ व धूप ४ ग्री म
 हा विष्णु सुन्दरी देवी नमः ॥ ॥ दीप ॥ अधन धूप या थ ॥ ॐ श्रीं सो ॐ व

दीपः श्री उग्रवधुदये नमः ॥ ॥ नेवद्य (मधम कव (थैयाय ॥ क्वाय ॥
ॐ नमो नैवद्य श्री उग्रवधुदये निवदयामि नमः ॥ नथ्यर्ण ॥ ॐ श्री उ
ग्रवधुदये नथ्ययामि नमः ॥ समय क्वाय ॥ पूनराचमनी ॥ य २ ॥
मूलनगया ॐ लि ॥ ॐ श्री उग्रवधुदये श्री पादकां पूजयामि नमः ॥ ३ ॥
वलि ॥ ॐ नमो देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ यानिमूडा ॥ पवित्राचमनी ॥ ॐ नमो
नूदवेधुदये ॥ श्री पादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥
कात्यायनी पूजा ॥ ॐ नमः ॥ महादेव (नवधुकात्यायनी श्री पापूज ॥ वलि

मूजा ३
ॐ देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ यानिमूडा ॥ गणपूजा ॥ हं जयादिह श्री पापूज ॥
ॐ देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥
नमो श्री पापूज ॥ ॐ देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ गणपूजा ॥ ॐ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥
ग्रहमाह कात्यायनी श्री पापूज ॥ ॐ देवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥
दिह ॥ श्री पापूज ॥ वलि ॥ ॐ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥
ॐ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥
ॐ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥ ॥ नमो नवधुदये श्री पापूज ॥

॥ यनमानन सदाह उमाद खनिह वि । इखययलिमान वदनं या
दिमं गिवं ॥ अ य नी मद्रला काली रुड काली कयालिनी । इग्नी देमा निवाध
री सधम्रा हानमासुन ॥ इ (नैलं वीरू धनायां सर्वगुरु कथं कनी एमना
सुजयंदहि उग्रवलि नमासुन ॥ नूड वलुज या दिग्ग व द्रायवी व वाद
य ॥ महाकाल विदवा दीन वीरू पुनमासुन ॥ अपनाध सह सुवि क्रियम
हर्तिर्मिया दासाह मिनिमो मिला क मस्य यनमग्नी ॥ रुजवजला यथ
नमदासः सर्वगुरु कथधना दिजयया किकामं भा दी यस्व दू देवनादि

उग्रवअयूजासंपूर्णार्थ अगम न प्रथध पदी पाद्य चन वि (को तत्सर्व परिपूरु
समु ॥ असाहनमस्तान ॥ ॥ समयं काय ॥ दू वया र्थगुनत र्थल ॥ मूल
नय विद्रव र्थ ॥ ॥ उग्रवद्वान र्थल ॥ अग्नी उग्रवधुद ॥ वीरू र्थया मिनम
॥ ॥ यनिवादन र्थल ॥ र्जुनी सो द्रुं गी महा विप्र नमूद यी ग्री उग्रवधु
दीनसाधनमग ॥ यनिवाशन र्थल ॥ मिनम ॥ २ ॥ अर्थी मं ख यालं खन
अलिषक वि अथवेन दू वं मे कियानम के लये ॥ अस्मत्मानदीयग्रा सु सु
दवनायूजाक सी नि अलिषक सु मद्रु हं म मु ॥ ॥ वनून तिय ॥ वन्द

मिधु

३५ निवसन्तु सख्यं दत्तं नृपसु स्यात् पूनः सख्यं नृपसु

नैलचितं यूयं पविशं पापनाशनं । आपदं हननं निर्यात श्रीमं न निवर्द्धनं
॥ ॥ दं वया क के तन ॥ ॥ द हिल श्री धर्त धा च्यं नाश ल श्री पून ॥ पून ॥ एसा
दं क नू म द वि सु द नी य न म भव नी ॥ ॥ सान का या डी सु क ल सु वि य ॥
य न मा न द र्श दा ह सु मा द त व नि ह नि । इ ॥ ख ग य य नि न्हा न ॥ व द न
पा हि मां गित ॥ ॥ स म य वि य ॥ अ लि पा ग म हं द या ॥ गृ ही ता य न म
य नी । स्त्री क य गु र (ग द हि ज र्यं द हि नि र्युं द ह ॥ अ वि ता (अ ह वं द ह
अ रु सा म न म ठ व । ना ग (अ क ह र्यं न स्ति ना म ग्री सु ख र्म य द ॥ स्त्री क

उत्तर सांघर्ष ॥१॥

न्यायः ॥ नैव श्रुतं यथाय ॥ साहासियतासिय ॥ ॥ न्यासलिकाय
वयाथी ॥ जं भूमुष्टाहानि मन्त्रादिकनषड्भे न्यासाय ३ ॥ ॥ नासि
यतिरत्न ॥ जं भ्रातृगत्यायसाहा ॥ कौविद्यानत्वायसाहा ॥ सोमिवनत्वाज
साहा ॥ धाममधुलथनाडासूर्यसाक्षिथाय ॥ वनस्तीलीखम्बोपनि
कावेकद्वेषात ॥ हात्रदाऊणभागासाङ्गभूमुकनामदातः सर्वप्रक्रये
वृक्षादिजयसाक्षिकामः ॥ मनदीयनीस्रष्टदवगादिउग्रवधुपूजासंप्र
र्शार्थं हनकर्मसाक्षिणांगी सूर्याय अर्थं नमः ॥ पूर्यं नमः ॥ ॥ इति

विमर्श न या यम गेव ॥ आ वसन सूर्य सा कि ॥ नृमि सफमी पूजा ॥ ॥ व
 लुकि यामत विय महनी मधून गोले कि र्थ विय माल ॥ ॥ सफमी क
 दूयूजा मये धन का डा ॥ सकलनी माल कसूव कव धिल ॥ खलु क सि
 ल वनन न कान खलु कुवाय नृलान यन श्री का ग मा ला स्वाय न ॥ ६ ॥ ख
 लु सित ॥ सिन्दूर कन कुह नखा न स्वा क दूखान स्वा क खलु स नय ॥
 दृष्टि कर्तु य ना य पृ पता अरु वान अजम का व स्वा ख ना व नय पद वा स
 नन अरु वान वाय नाय होले थय २ खलु वा स नय ॥ थलु ल उ द्वा न

३ हा हा स्त्री क जग ॥ अरु क बा द्हा स्त्री या डा प्र सान प्र यर का १
 या य ॥ कसू मल गुं गु क रु या डा ॥ वन सिधन निंदा लाय ती र्थ ॥ मधन या य
 कसू मधन ॥ कल सस ती र्थ ले ख सा र्द थन व नन अरु वान वाय काला वा
 य ॥ उवेल स्त्री मा दृष्टि अरु वा क र्तु य ना य पृ पता अजम का ॥ कसू क ले
 स र्थ लु सि थ पिनी माल कसू नय थव वि दू या या डा माल कसू क ले ना
 दा या डा नय प्रुं दू स्त्री सिधन मू स गु द ॥ धी वाय ॥ सफ मिया वाय विधि ४
 उं नम १ ग्री ग ॥ मय ॥ माल दा स्त्री थलु ल उ द्वा न या य ॥ ॥ निगल न ना
 सिय ३ ॥ या वन या म ज्वा दि क न खलु क द्या स या य ॥ ॥ लखन ह
 २ व व लु द्धि स म य न या डा कसू पू य ३

श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै नन्दकीनस्त
ननमः॥ ॥ सावनि ॥ मूलं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै न
न्ददक्षिस्ताननमः॥ ॥ साध ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउ
ग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै नन्द दक्षिस्ताननमः॥ ॥ कश्चि
मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै न
मधुस्ताननमः॥ ॥ साखन ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउग्र
वधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै नन्द सैकं ताननमः॥ ॥ तीर्थगुः

द्विस्तान ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै
नन्दमलिस्ताननमः॥ ॥ प्रनः ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं
श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै नन्द प्रनः ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं
॥ ॥ वन्दन ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यवि
वायै नन्द वन्दननमः॥ ॥ वरुसो वतनतिक ॥ मूलं श्रीमहा
विष्णुसूक्तं श्रीउग्रवधुयैसाक्ष्यैस्यविवायै नन्द वरुसो व
न्दनानुलेयननमः॥ ॥ वरुसो वतन ॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसूक्तं

ग्रीउगुवधुयेसाझयेसपविवावायेः०दंनकचन्दनंनमः॥ ॥द्वीकृत॥
मूलंकुंभीमहात्रियूनसुन्दर्योग्रीउगुवधुयेसाझयेसपविवावायेः०दंनकचन्दनं
नमः॥ ॥सिन्दूर॥मूलंकुंभीमहात्रियूनसुन्दर्योग्रीउगुवधुयेसाझ
येसपविवावायेः०दंनसिन्दूरंनमः॥ ॥जजमका॥मूलंकुंभीमहात्रियून
सुन्दर्योग्रीउगुवधुयेसाझयेसपविवावायेः०दंनझायवीनंनमः॥ ॥त्वा
कमासाखान॥मूलंकुंभीमहात्रियूनसुन्दर्योग्रीउगुवधुयेसाझयेसपविवावा
येः०दंनगुणितमालानानायूथंनमः॥ ॥कनुचिताकादिवमु॥मूलंकुं
दंवि

ग्रीमहात्रियूनसुन्दर्योग्रीउगुवधुयेसाझयेसपविवावायेः०दंनद्विकैकर्तुयता
कांबधुयैकधजविमुसहितानंनमः॥ ॥मूलजुयापुनितय३॥उगुवधु
जुयापुनितय॥कतन॥ ॥वलासलावकैस्त्रिपदाने॥कमानदवधि
स्यंन॥वाक॥त्रय॥वतवराहनि॥अद्यादि॥नेयावत्रन्दाकमानूतामही
अग्निजलावरु।तावत्तुंविनंकारंवनरुथायस्त्रिपारुव॥स्त्रिपारुवमहा
देविदेवानामनूजाधिय।यावदहमिथयनंतावत्तुंस्त्रिपारुव॥
॥मगासदी॥वतदास॥सर्वमनुकयधनादिजयका॥मगावदीयमहाय

समीपार्चयन्नाउ गु वज्रुदि स्तुष्ट दवतादविवनस्काया सि नारुवचनस्का
या सि नारुव ॥ नायकाय ॥ इत्येवमिह कृति ॥ कत मनम स्कारं ॥ इति सि
नकाय ॥ ॥ धर्मेति मास कर्म पूरुया दं डि यकाडाहायव रुत
सि आदिसमस्तं कवन न त्या डावाया डा विधि (धर्म) मद्राष्टमी पूजा या य ॥
रुना ॥ ॥ इति श्री स्थिरपूजा ॥

पूजायाय धनं तिस्रं

नमः १ यत्र दवताये ॥ अथ मद्राष्टमी पूजा विधिः ॥ कल (गंधर्न) ॥ विसयक वा
य (थकनय) ॥ नाहाष्टया नय ॥ नाय वाम ॥ नमः १ धर्कं वस्तु कनय ॥ पूर्यंतय
॥ श्रीं वं वनू नयनमः ॥ ३ ॥ नासिय २ ॥ नें आत्मनस्वाय स्वाहा ॥ श्रीं विद्या तत्वा
य स्वाहा ॥ श्रीं मित्र तत्वा य स्वाहा ॥ ॥ सूर्या धियाये ॥ अथादि ॥ रात्रि द्वाज (गण)
व्नी स्वप्रदासः १ सर्वम कुरु यधनादि जय पाप्म कामः १ नमः १ य मद्राष्ट
मीपार्चयन्नाउ गु वज्रुदि स्तुष्ट दवतादि उ गु वज्रुदि दवत न क तु ग्री सूर्या य नू धर्न
मः १ ॥ पूर्यंतमः १ ॥ ॥ गुन मगुल पूजा ॥ नें गुन पाद का र्थं नमः १ ॥ न अखण्ड

मद्युलाकारं. वाक्यं यन न वावर्. तस्य दं द भितं यन तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥
 कनन ॥ अथाडाकू ययार्न ॥ ॥ अर्घी स्तुतं ॥ वं सलिका गवाक य कथाय
 (थकनय ॥ की आधन ग क्का दिश्या नमः ॥ रुट् धकं अर्घी सलिका नार्प सल मनु
 लसतय ॥ नमः ॥ धकं लखनय ॥ नं धकं वं तं कं कतय ॥ अर्घी ग मूडान
 तीर्थ याहन याय ॥ कर्तं गं (न वज मून वं वं (गं उव नि स न स्वनि । न स्मि द
 सिधु का व नि. जल सिन स नि धि क न ॥ वं १ धनू मूडा कन ॥ नं ज प न थ
 अ १० ॥ ताल गय दि ग्ये न या य रुट् ३ धकं ॥ धर्ल खन दान सहाय ॥
 न्ति अर्घी स्तुतं ॥ ॥ दान द व ती पूजा ॥ गं ग ल य न य नमः ॥ स स न

४ हायात्रय ४

येन मः ॥ ईं ईं मयि नमः ॥ कं क गु या ला य नमः ॥ नं की श्री दान द व ना खानमः ॥
 न्ति दान पूजा ॥ ॥ थ व अ स न स्तुतं ॥ ला सा या न ल स लिका गवा क था य
 थ पूजा ॥ की आधन ग क्का दिश्या नमः ॥ (थ लो स ला य थि सी तं ॥ नं ए थि वाः
 म नू ए वृ स वि ४ स न ल के द १ कू म्मा दि व ता आ स न वि नि या ग ४ ॥ नं ए थि वा
 या धृ ता ला का द वि ल्व वि स ना धृ ता । त्वं य धा न य मा द वि य वि र्ग क न वा स न
 ॥ जाय ॥ ला सा द व तं लिका गवा य पूजा ॥ की आधन ग क्का क म ला स ना य
 नमः ॥ वी ना स न या दं वा न ॥ न्ति आ स न पूजा ॥ ॥ वि द्ध नि वा न ॥ ॥ का
 अ क न का या वि अ र्घी स थ क डी त ॥ नं अ प स र्घी नु य रु ता य रु ता वि स र्गि
 ३

ता। यस्तु ताविघ्नकर्त्तुं न मनस्य नुजिवाः ॥ सोऽङ्गुय रुट् ॥ बहुदिगर्मीहान
 काय ॥ कालगुयदिग्धनतयाय ॥ रुट् ३ ॥ १० ॥ नृतिविघ्ननिवोर्नर्त्त ॥ ॥ गत
 पुनर्मूलनमेस्तानयाय ॥ खवम ॥ नृगुनस्थानम ॥ खवम ॥ गंग। लभयनम
 ॥ दधुस ॥ मूलग्रात्रियूनमूदनीष्टदवतायेनम ॥ धनजाय ॥ ७ ॥ पान
 यामयाय ॥ खवक्रासतिस्त्रीखवनसाद्रकाय ॥ यं १७ ॥ धममुपायायपून्ख
 मलक ॥ ॥ नयाक्रासतिदावसाकृतकंथयापपून्खमिनदाकृष्णाय ॥
 नृ ३४ ॥ खवतिस्त्रीखवक्रासनसागालनसीधयानलिदकंपूयकृष्ण
 यी ३२ ॥ ॥ वं १७ खवतिदावखवनसाद्रकायसहसुदलसवाकमुमु
 जिगतां खगुदि ॥ हंस ४४ कंकुलिनी सहित षड्जुष्ठादवतासहितथने

यदावसहसुदलसवाकमिववतायं नय ॥ ५५

तनसिंवनयावमवनूतनगनीनउत्थलियाय ॥ ॥ ले ३४ नयाक्रासंतिदाव
 तज्रवयवादि सिधुलानथकठिनयाय ॥ ॥ हं ३२ खवतिदावखवक्रास
 नसागालन ॥ वेतेन्येखवलावयपूधमनीनखवलावय ॥ ॥ साहं धक
 सहसुदलसवाकककुलनी आदिथवरथय संतय ॥ नृतिपानायाम ॥ ॥
 पानयुतिस्त्रीनगलसथिसंनय ॥ आं जी की ॥ ३ ॥ नृतिपानपुनिस्या ॥ ॥ अ
 थमृथादिनाम ॥ हाथजातय ॥ मृसमाहकान्यासमनुस्य ॥ माउसथिय ॥
 नृवक्रासथयनम ॥ मूखस ॥ नृगयगीकुन्दसनम ॥ नृगलस ॥ नृमाह
 कासनखनीदवतायेनम ॥ लिङ्गस ॥ हलावीजायनम ॥ पालिनयास

[illegible][illegible]

वा॥ ओं नमः॥ थं थूवा॥ अं नमः॥ भा उ द व नं॥ अ॥ नमः॥ मं हू व नं॥ कं नमः॥
ऊ व वा हा न स॥ रं नमः॥ ऊ व वू ल्या॥ गं नमः॥ ऊ व का य न॥ घं नमः॥ ऊ व य
वि द ह्य अति॥ ङं नमः॥ ऊ व य वि द ह्य अति॥ चं नमः॥ ख व वा हा न स॥ कं नमः॥
॥ ख व वू ल्या॥ जं नमः॥ ख व का य न॥ जं नमः॥ ख व य वि द ह्य अति॥ ५३
नमः॥ ख व य वि द ह्य अति॥ टं नमः॥ ऊ व क न वू क स॥ ० नमः॥ ऊ व पू ३॥ उं नमः
॥ ऊ व गु थि॥ टं नमः॥ ऊ व गु थि य वि द ह्य अति॥ टी नमः॥ ऊ व य वि द ह्य अति॥
॥ हं नमः॥ ख व क न वू क न स॥ थं नमः॥ ख व पू लि स॥ दं नमः॥ ख व गु थि॥
धं नमः॥ ख व पा लि य वि द ह्य अति॥ नं नमः॥ ख व य वि द ह्य अति॥ यं नमः॥

ऊ व वा हा न स॥ हं नमः॥ ख व वू क स॥ वं नमः॥ कू क ट स॥ रं नमः॥ ना हि॥ मं नमः॥
॥ वा थ स॥ यं नमः॥ नू ग ल स॥ नं नमः॥ ऊ व हूं सू नी॥ लं नमः॥ कू क टि स॥
वं नमः॥ ख व हूं सू नी॥ गं नमः॥ नू गं नि स्या ऊ व ला हा वा लं॥ घं नमः॥ नू ग
लं नि स्या ख व ला हा वा लं॥ मं नमः॥ ऊ व गु थि पा लि वा लं॥ हं नमः॥ ख व गु थि
पा लि वा लं॥ लं नमः॥ नू ग लं नि स्या ख वू लं॥ कं नमः॥ नू ग लं नि स्या कू थू लं॥
॥ नि मा ह का न्या स॥ ॥ त ता वा॥ व द व ना न्या स॥ ॥ जं जी श्रीं अं जीं नूं जीं उं डूं
जं मूं हूं जं नूं उं डूं अं जीं नूं व मि नि वा ल्य व ना ये नमः॥ ॥ जं जी श्रीं कं रं नं
घं दं कूं का मं व नी वा लं॥ व ना ये नमः॥ क पा ल स॥ ॥ जं जी श्रीं वं कूं जं रं
२ नि न स ५२

कं म म बहुवर्ण साधन विनियोगः ॥ आय ॥ ॥ माल सधिय ॥ दक्षिण मूर्ति
मृषय नमः ॥ अरु म ॥ यं कि कृ न स नमः ॥ नू ग ल ॥ श्री म हा त्रि पू न स न्द नी
द व ता ये न मः ॥ गु क्र म ॥ जे वी ज्ञाय न मः ॥ य। ति निया स ॥ कीं क य न मः
॥ स र्व क म ॥ सौं की ल का य न मः ॥ आय ॥ म म बहुवर्ण साधन विनियोगः
॥ ॥ ति मृ धा दि न्या स ॥ ॥ त तः क न म न्या स ॥ जे अ मृ षा त्यां न मः ॥ कीं
न र्ज नी त्यां न मः ॥ सो म ध्र मा त्यां न मः ॥ जे अ न मिका त्यां न मः ॥ कीं अ ति
ष्टा त्यां न मः ॥ कीं क न त न य षा त्यां अ मृ य न मः ॥ ॥ ति क री न्या स ॥ ॥ अ
इं यो स ॥ ॥ ॥ जे हं द या य न मः ॥ कीं गि न स ख ह ॥ सो गि खाय

वसु ॥ नैकवसाय नमः ॥ श्रीं नमः नमः यथा यथा ॥ सोऽस्माय नमः ॥ नैकिमूल
नमः ॥ ॥ नमो मूलन स्वधन व्यायक न्यास या य ॥ ३ ॥ मूलपात्रा या
मया य ॥ नै १ गजवक्रास किय खवन साद्रकाय ॥ श्रीं ३ ४ नपाद्रास किय सांन
य ॥ सो ३ २ खवनि दावजवक्रास न साता लत ॥ नैकिपात्रा या म ॥ नैकिपा
त्र ॥ ॥ श्रीं न्यासधन कावथ वज्रात्मा पूजा ॥ वनन किय ॥ नै श्रीं न्यासधन वनन
नमः ॥ श्रीं नमः नमः ॥ श्रीं न्यासधन वनन नमः ॥ सिद्धनत किय ॥ श्रीं न्या
सधन सिद्धन नमः ॥ स्वातन नमः ॥ नै ३ श्रीं न्यासधन वनन नमः ॥ यवमालासमू
लन नमः ॥ श्रीं न्यासधन वनन नमः ॥ मूलं श्रीं महाविष्णुसुन्दरी देवी स्वात्मन ग्रीयाद्रकाय

॥ १००० ॥

1970 I

धर्ममहिनां भस्वर्तुं लभेनुत्तममय ॥ पूजा ॥ हंससूर्यमधुलाय नमः ॥ लेख्य
 ने ॥ श्री धर्म ॥ नमः ४ धर्म वत श्रुत तस्मान्न कः ॥ कः धर्मि मोहनी कः भुक्तु
 पूव सिद्धि वर्गं स्वसुतय ॥ श्री कृष्णमूलाय नमः ॥ श्री वाह नयाय ॥ कांग (नव ज
 मूनयव (नजाव विमनस्वति ॥ नमो दे सिद्धकाय विजलसि संति धी कुरु ॥
 व (धन मूला ॥ श्री स्व पूजा ॥ संसा मम पुलाय नमः ॥ मत्स्य मूलाय पूजये ॥
 १० ॥ श्री स्व मूला ल गृय दिग्वन्धन याय रुद्र ३ ॥ ४ ॥ श्री स्वत मा मणि
 सकल नादि व द्वा रथ मं मूलग यणीत हाय ॥ श्री विप्राय विप्र रुद्र कां का
 मग्व नीधी महि ॥ श्री तन्त्र ४ श्री तन्त्र ४ पुवा दया ७ ॥ नृति गी स्वस्वाय नमः ॥

पूषा राजन (मधर्त ॥ रुद्र धर्म लेखन हाय ॥ पूषा नय ॥ यं १० नं १० वं १० मूलन
 धर्म ३ वं (धन मूला ल गृय दिग्वन्धन रुद्र ३ धर्म ॥ नृति पूजा रुद्र (मधर्त ॥ ॥
 तना घट स्थापन ॥ यव स्वदा सर्व मूल स्वत हाय रुद्र धर्म ॥ शिका ल वा क थाय
 (थ पूजा ॥ श्री आधन गक्षा दिखो नमः ॥ (थ मं विगये रुद्र धर्म (ग नाव ॥ (थ पू
 जा ॥ मं वद्वि मलु लाय नमः ॥ (थ घट त म रुद्र धर्म वा गोडा पूजा ॥ श्री सूर्य म
 पुलाय नमः ॥ घट स नी र्थ नथन ॥ श्री श्री मृताय नमः ॥ पूजा ॥ संसा मम पुलाय
 नमः ॥ रुद्र धर्म लेखन हाय ॥ रुद्र ३ दाय ॥ रुद्र श्री वगुष्ट नं ॥ वं (धन मूला ॥ नम
 ४ धर्म वत तस्मान्न के नय ॥ घट स शिका ल वा य दथू स सो वीरु याय ॥ पूजा या

य ॥ ॐ नमः ॥ ३ ॥ मत्स्य मूडा पूसा ॥ अधनया य ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 नमाका म गू न्यावादि निवन्दु सूर्या निरु कि नि पार्ग वि ग २ सास्त्र ॥ १० ॥ ॐ जो ग्री
 आनन्द गाय वि घट सु धाद वी धी मदि । तनाद्विता नी पु या द या न ॥ ३ ॥ ॐ वां
 वी वू वं वी वः ॥ वृक्ष गाय वि मा वि ना ये सु धाद ये नमः ॥ ॐ को को को को को को
 को को सु धाद वृक्ष गाय मा व य २ अमृत न ग्रा व य २ स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ गी गी
 गी ॥ ॐ गी गी ॥ गी
 कृत्स्न वृक्ष अमयं कुर्व । क वाह वां वृक्ष ह त्यां न न न ना ग या म्य ह ॥ ॐ सूर्य
 म पु ले सूर्य न व नू न्म ल य सूर्य न । अमा वीज मय द वि मु क ग म पो दि मू या नां

॥ सो देवा नां पु न वा वी जं वृक्षानन्द मयं यदि । न न सूर्य न न द वि वृक्ष ह त्यां वा पा
 ह ॥ ३ ॥ ॐ जो ग्री अमृत न ग्रा व य २ अमृत न व वि नि म हा पु का म य कृ स्वा हा
 ॥ ३ ॥ ॐ सा हं सा हं सा हं सा व नू न्म द हं स ॥ ११ ॥ मूल न ॥ अधन धा न ॥ आनन्द
 ले न व पूज ॥ ॐ आनन्द ले न वा य व षट् ॥ स सु धाद वी वी षट् ॥ ३ ॥ या नि मूडा ॥
 ता लु ग य दि ग्य न्ध न या य ॥ १२ ॥ ॐ नि ड व ॥ अधन ॥ ॥ मु द्वि मी न मूडा ॥
 ॥ अधन ॥ ॥ १२ ॥ ध की अर्घी गी ख या ली ख न हा य ॥ पू य ॥ य ॥ १२ ॥ व ॥ १२ ॥ व ॥ १२ ॥ मूल
 न ३ ॥ ॐ व ॥ ध ने मूडा ॥ १२ ॥ ता लु ग य दि ग्य न्ध न ॥ ॐ नि ड व ॥ अधन ॥ ॥
 न न ॥ गी या गु सा धन ॥ दे व थ व व अ न न स व स ग्री या ली ख न हा य ॥ १२ ॥

४३ कोशिकासर्वज्ञानादयः

和

प्रयच्छय मूलै ॥ मञ्जुसूतय मन्त्र ॥ ॐ कौश्या महा विप्रेन्द्र सुन्दरी या नुं पति स्थाप
 या मि नमः ॥ तय ॥ ध पूजा ॥ की हं दी दं द्वां दं वसु पद द्वादश कलात्मन मूर्त्य
 मञ्जुलाय श्री महा विप्रेन्द्र सुन्दरी या नुं यन ॥ मः ॥ कर्त्तव्य विनी कला दित्यो नम
 ॥ ॥ श्री घट मया कृत्त मन्त्र न पात्र सधन मन्त्र ॥ मूलै श्री महा विप्रेन्द्र सुन्दरी
 दया या नुं मूर्त्य या मि नमः ॥ मुष्टि मीन मूढा दि चन्दना ॥ पृथ गुणु पूर्व न
 य मन्त्र सो कौ ॥ ॐ ॥ श्री मन्त्र मूढा वाल ॥ की साय ॥ सो यानि मूढा ॥ व ॥ धन
 डाकन ॥ पूजा याय ॥ सो सां सो मूं सो मूं हाने पद काम पुद द्वादश कलात्म
 न सा म मञ्जुलाय श्री महा विप्रेन्द्र सुन्दरी दया श्री या नुं मन्त्रा यन मः ॥ श्री

धनमुद्राकने ॥ रुद्र तालश्रवणदिग्दर्शनं ॥ नृतिमधुपर्कस्वायम् ॥ ॥ न
मोगुननर्थर्षीगुनपात्रसंवादद्वयनथवगिरसस्तुत्ये ॥ ॐ स्वाहा गीतस्मान्
नन्दनाथग्रीष्मर्षुलस्मान् गीपादकांनर्थयामिनमः ॥ ॐ स्वाहा गीतस्त्रीवाजना
थयनायनगुनग्रीपादकांनर्थयामिनमः ॥ ॐ स्वाहा गीविद्यानन्दनाथयनमधु
गुनग्रीपादकांनर्थयामिनमः ॥ ॐ स्वाहा दिव्योद्यगुनग्रीपादकांनर्थयामि
नमः ॥ ॐ स्वाहा सिद्धोद्यगुनग्रीपादकांनर्थयामिममः ॥ ॐ स्वाहा मानवोद्य
गुनग्रीपादकांनर्थयामिममः ॥ ॐ स्वाहा सर्वगुनग्रीपादकांनर्थयामिनमः ॥ नृति
गुननर्थर्षी ॥ ॥ शो गवागामृतन ॥ ॐ श्रीगोमूतिनाम्ना वषट्कारं वरुण

[illegible]

३॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

याय ॥ ४७ ॥ नमः ॥ जे ह द याय नमः ॥ ४८ ॥ को मि न स स्वा हा ॥ सो मि स्वा ये व षट ॥ जे
 क व वा य ह ॥ ४९ ॥ की न ग ग या य वो षट ॥ सो अ मु य ह ॥ ता ल उ य दि न्य
 धन ॥ या नि मू डा न स मू खी क न ल ॥ ॥ ख डि क क वा अ स न त य ॥ जे डी
 श्री आ स न स म र्थ या मि न म ॥ ॥ पा धा दि उ य वा न ल य जा ॥ जे की सो ज न न
 पा थं मि म हा रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ म र्थ न अ र्थ न ॥ मू ल ॥ ॥ द म र्थ
 श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो स्वा हा ॥ ॥ अ र्थ न आ व स न ॥ जे की सो ॥ ॥ द मा व
 म नी र्थ श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो स्वा हा ॥ ॥ म धू य क न य ॥ जे की सो ॥ ॥ द
 म धू य क श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो व ॥ ॥ पू न अ र्थ न आ व स न त य ॥ मू

ली ॥ ॥ द पू न वा व म नी र्थ व ॥ ॥ म र्थ न स्तान ॥ जे की सो ॥ ॥ द स्तानी र्थ श्री म हा
 रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ मू ल न खा ल क रु य ॥ ॥ व रु स म र्थ ॥ मू ल ॥ ॥ द
 व न्द ना तू ल प र्थ श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ व क व न्द न ॥ मू ल ॥ ॥ द
 द व क व न्द न श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ सि न्द र ॥ मू ल ॥ ॥ द न क
 व न्द न श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ मा रु नी ॥ मू ल ॥ ॥ द मा रु नी श्री
 म हा रि पू न स न्द नी द थो न म ॥ ॥ व मु ॥ मू ल ॥ ॥ द व मु श्री म हा रि पू न स न्द
 नी द थो न म ॥ ॥ अ ल काल ॥ मू ल ॥ ॥ द म ल काल श्री म हा रि पू न स न्द नी द
 थो न म ॥ ॥ मा ल स्तान ॥ मू ल ॥ ॥ द मा ला पू र्थ श्री म हा रि पू न स न्द नी द थो

॥ ॥ नमो ॥ मूलं स्वाहा श्रीमहाविष्णुसुन्दरी देवी श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥
॥ पूननाममनं ॥ मूलं ॐ देयुननाममनीयं श्रीमहाविष्णुसुन्दरी देवी २ ॥ ॥
॥ ग्वात्रादिं मुखमुद्रि ॥ मूलं ॐ देताम्वनादि मुखमुद्रिं ॥ महाविष्णुसुन्द
री देवी निवेदयामि नमः ॥ ॥ मूलं ननु या उल्लिखितय ॥ ॐ कौं सो ॥ श्रीमहा
विष्णुसुन्दरी देवी श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ आतिमूडा कत
॥ ॐ निमूल पूजा ॥ ॥ तताय विवाय पूजा ॥ ॥ न स्नान के श्रुतगाय द्वाद
दव या के श्रुत स्नान ॥ ॐ कौं सो ॥ श्रीमहाविष्णुसुन्दरी देवि विवाय नास्तु
पूजयामि आस्तु देहि ॥ तत्रैषार्थनाया दनमस्तु त्रयाय ॥ ॥ चक्र

पूजा उल्लिखितमूलन ॥ ॥ ॐ श्री सुन्दरी निस्वामी पादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ
श्रीं ऊं का म व यी दि वि वि वि निस्वामी ४ पादकां पूजा यामि नमः ॥ श्रीपादकां
॥ मूलं श्रीमहाविष्णुसुन्दरी निस्वामी पादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ
यत्रायं श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ
ऊं यामि नमः ॥ ॐ श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ श्रीपादकां
नमः ॥ ॐ श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ
नाथमदिगगनानन्दनाथ ४ श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॐ
विष्णुनन्दनाथमदिगगनानन्दनाथ ४ श्रीपादकां

पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ नवावनवपूजनं॥ लं० नृदिदमसाकयाल
ह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं अतिमादिसर्वकामसि
द्धिह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं अतिमादिसर्वकामसि
द्धिसहितजं वक्राया यस्मै॥ माह काह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्ययामित
मः॥ ॥ श्रीं श्रीं सर्वसंसारलक्ष्मिदिवीरुमूलाह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामित
र्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं आनिमूलाश्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं
श्रीं विष्णुमूलाश्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं सोमिप्रवाह
वीश्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं धातुगंकमलायश्री

पादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं काशकर्वश्चदिगनीनाकर्वशी
निष्ठाश्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं अतज्जकसूमादिजनकमा
तिनादवीह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं सर्वसंसारिणी
कादिसर्ववैदक्यंकनीमकीह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥
श्रीं श्रीं सर्वसिद्धिपदादिपुत्रसोलाग्धदायिनीदवीह्यः॥ श्रीपादकां पूजयामितर्य
यामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं सर्वहृदि सर्वशिररुतपदादवीह्यः॥ श्रीपादकां पूजया
मितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं विभिन्नादिकोतिनीवारद्वेताह्यः॥ श्रीपाद
कां पूजयामितर्ययामितमः॥ ॥ श्रीं श्रीं विप्रसिद्धावकुंभनिलेश्रीपादकां पूजया

गिनय्यामितमः॥ ॥ उं डीं गौं वेंवा ॥ लखगोपाइकां पूजयामितर्थयामितमः॥
 उं डीं गौं वायल्यं गोपाइकां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ उं डीं गौं पा ॥ लखगोपाइ
 कां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ उं डीं गौं अकू ॥ लखः गोपाइकां पूजयामितर्थ
 यामितमः॥ ॥ उं डीं गौं कू ॥ मग्नैवकु कामगी योस य मित्ती भन नदनाथ
 त्तिक गो काम भवनी देवी ॥ गोत्र दास मकि गोपाइकां पूजयामितर्थयामि
 तमः॥ ॥ उं डीं गौं श्रीं ॥ योवकु जाल नवपी ॥ १० मशी भन नदनाथ त्तिक
 गोवकु भवनी देवी गो ॥ विष्णु त्तम गकि गोपाइकां पूजयामितर्थयामितमः॥
 उं डीं गौं सो ॥ श्रीं गो ॥ सोमवकु गोपूजु गित्ती ॥ १० गो उ ॥ श्री भन नदनाथ त्तिक
 सोमवकु ॥

क गो ल ग व निरु ग मा लि ना दे वी गो वु क्रा त्तम गकि गोपाइकां पूजयामितर्थयामि
 तमः॥ ॥ ॥ गो न नदनाथ यो गित्ती सर्व सिद्धि एव वकु समुद्रा स सिद्धयः सा य धं सव
 दना ॥ स य निवा यत्ता ॥ स वी प्यात्र ॥ पूजि ना स कुत र्थि ता स कु ॥ ॥ या नि मूडा क
 ने ॥ ॥ उं डीं गौं सर्वो नन्द मयी गो वेंद व वकु गो निपूत्र सुन्दरी देवी गो पाइ
 कां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ उं डीं गौं गो निपूत्रा म्वा वकु भवनी निष्ठा गो पा
 इकां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ उं डीं गौं गो मरु निपू सुन्दरी मद्रा रुद्रा त्तिक गो
 वकु वकु भवनी गो पाइकां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ ॥ उं डीं गौं उं डीं कि ॥
 दिह्यः गोपाइकां पूजयामितर्थयामितमः॥ ॥ ॥ उं डीं गौं निपूत्र वकु वा गित्ती

देवीसां ज्ञेयः सपत्निवानह्यग्रीपाइकापूजयामितर्ययामिनमः॥ ॥ पूनमू
 तनगयाऽङ्गतिनयः॥ योतिमूडा ॥ नूतिमूलपूजा ॥ ॥ तताहगवतिपू
 जा ॥ न्यासयाय ॥ जेनाश्वपदं श्रीगुहाह्यतमम् ॥ उगुवः (धुनज्जनी
 ह्यांस्वाहा ॥ नयसद्विनिमः माह्यावधट ॥ हूं हूं सदानकरं अनामि
 काह्यां हूं ॥ ह्यां मां हूं सः कतिष्ठाह्यां वीधट ॥ मृत्स्वः हनेकननय
 ध्याह्यां अमुयाय हट ॥ जेनाश्वपदं हृदयाय नमः ॥ धूं उगुवः (धु
 निनसेस्वाहा ॥ नयसद्विनिमिस्वायवधट ॥ हूं हूं सदानकरं
 कववाय हूं ॥ ह्यां मां हूं सः नयठयाय वीधट ॥ मृत्स्वः हने अमु

य हट ॥ नूतिन्या सः ॥ ॥ अमनमूजायाय ॥ जेनाश्वपदं क्लादित्या
 नमः ॥ जेनाश्वपदं सनाय नमः ॥ जेनाश्वपदं सनाय २ ॥ जेनाश्वपदं सनाय
 नमः ॥ जेनाश्वपदं सनाय नमः ॥ जेनाश्वपदं सनाय नमः ॥ नूतिनाम
 नपूजा ॥ ॥ तताह्यन ॥ जेनाश्वपदं सनाय देवीयाय हनेकननय
 मिवा ॥ तफवामीकनारहासाविद्युत्कोटिसमप्रकाश ॥ पीठवकेकुला
 हाग ॥ जिनगवानूहासिनी ॥ किमीठीकुलालाकाली ॥ कयूनामलिने
 यूना ॥ नलमासाविविधेषः हनेमासावलमिता ॥ अष्टादशगुणाको
 नादिवावमुअहविता ॥ हटकंधनहसं वगताद्यन्मसू (आहि

मं। पा मी कर्तु निह सं व द्वा डं कं ग या म् कं ॥ वि नू मू डं त था सि दिं ॥
 य म र ग व ती य नां ॥ सिं हा स न स मा नू रं म दि वा पा द व र्जि तां ॥ म दि वा
 सून नि ह निं व. सर्व दै त् वि ना मि नी. ॥ ग बा यो उ म रु स्मा च य द्वा डं
 उ म नू वि ना ॥ नू ड च पु प व पु च व पु ग व पु ना यि को। व पु च पु
 व ती र्व व. व पु नू पा ति व लु का ॥ न व सी वा ग व पु च म ध स्मा नि पु ल
 दि ता। ला व ता री नू वा रु धा. ती ला गु क्ता व धू मि का ॥ पी ता व पा पु ना र्द
 या. आ ली ट स्मा ह वि स्मि ता। म दि यो च ये मा ग स्मी न् क न ग रु मू र्खि का
 ॥ स्मा य वृ ले न पं स्मा वा उ ग व पु दि त कु मा ॥ पु र्वं आ त्वा म हा दे वी.

म हा र व ती न मा मु न ॥ उं आ न प र्थी न म ॥ ॥ आ वा रु ना दि मू डा क न ॥
 हू र ग व ति गी उ ग व पु द वि नू हा ग रु २ ह नि रु २ ह स नि दि
 ता र व २ ह स नि नू द्वा र व २ म म पू र्जा ग हा न ॥ व द्वा ड ति न डी
 य ॥ ॥ पा यो दि उ य वा र न ॥ पा य ॥ हू र ग ल्पा र्थं गी उ ग व पु द वी
 न म ॥ ॥ नू र्थ ॥ हू र द म र्थं गी उ ग व पु द वी स्मा हा ॥ ॥ आ व
 न ॥ हू र द मा च म नी र्थं गी उ ग व पु द वी स्म ध ॥ ॥ म ध य र्क ॥
 द म धू प र्क उ ग व पु द वी र्व ॥ ॥ पु न वा र म न ॥ हू र पु न वा र म
 नी र्थ न म ॥ ॥ स्ना न ॥ हू र द स्ना नी र्थं गी उ ग व पु द वी न म ॥ ॥
 हू र नै र्वा ल रु य र्धु र्क ॥ ॥ र न्द ना दि न पू र्जा या य ॥ ॥

ग्रीखलु ॥ ॐ नमो देव नंदनं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ वहुसु ॥ ॐ नमो देव
नंदनं नमो देव नंदनं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ वहुसु ॥ ॐ नमो देव
नंदनं नमो देव नंदनं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ इति कत ॥ ॐ नमो देव
ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ सिंदुन ॥ ॐ नमो देव सिंदुनं ग्रीउगवधुदवोनमः
नमः ॥ ॥ मोहनी ॥ ॐ नमो देव कुरुसंगं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ वसु
असं कालनं ॥ ॐ नमो देव वसुलक्ष्मीं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥
लाक हान साल हान हान नाना सां ॥ ॐ नमो देव सालादिना नापूर्यं ग्री
उगवधुदवोनमः ॥ ॥ धूप दीप (ग) धर्म हवया (थं) ॥ ॥ धूप

दानं ॥ ॐ नमो देव धूप ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ दीप ॥ ॐ नमो देव दीः ग्रीउ
गवधुदवोनमः ॥ ॥ लेख (ग) धर्म हवया (थं) ॥ ॥ लेख ॥
ॐ नमो देव लेखं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ पय ग्रीसतं ॥
॥ पूनः रुकाउप वान कृप ॥ ॥ ॐ नमो देव रुसमूलादियथा गकि
उप ठानान् ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ पून नावम
न ॥ ॐ पून नाव मनीयं ग्रीउगवधुदवोनमः ॥ ॥ मुख मुद्रिकुय ॥
मूल नपूर्या ॐ लिख्ये ॥ ॐ नमो देव ॐ उगवधुदवोनमः ॥ ॥ निदुं
सदानक २ लां मां दुं स १ मृत् रुद ॥ ॥ हा ॥ ३ ॥ वलिविय ॥ ॐ ग्री
१ ग्रीवा पूज ॥ १

उगवधुदयो नंदनेवर्धं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ जिं गूं लया मिमूडा केने ॥
 ॥ ननापविपूजनं ॥ अं अं वृडवधुये पादकां पूजया मिनमः ॥
 ॐ न्नी पुवधुये पापू ॥ उं डं वधुये पापू ॥ मं मं वधुनायिकाये
 पापू ॥ ॐ वधुये पापू ॥ नं नं वधुवहो पापू ॥ उं उं वधुनूपाये पा ॥
 अं अं नितिवलिकाये पापू ॥ वलि ॥ अं अं वृडवधुदिह्या वलिं गृह्ण
 २ स्वाहा ॥ हटसा पूजा कुमनं वलि विरच्यति ॥ ॥ तत् ४ कात्यायनी ७
 पूजनं ॥ आसनं ॥ नं सिंहासनाय नमः ॥ ॥ यथा ॥ लि ३ ॥ डी ४ मह
 इ ॥ न वलिकायाय नमः ॥ गी पादकां पूजया मिनमः ॥ ३ ॥ वलिवि

य ॥ नंदनेवर्धं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ मूडा ॥ ॥ यनिवानपूजा ॥ हं जयाये
 पादकां पूजया मिनमः ॥ हं विजयाये पापू ॥ मं अजिताये पापू ॥
 लं अयनाजिताये पापू ॥ मं अमृ नोपापू ॥ नं ससु नोपापू ॥ वं मा
 हिनोपापू ॥ यं आकर्षणोपादकां पूजया मिनमः ॥ वलि ॥ हं जया
 दिह्य नंदवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ हटसा व्याप्तिं विरच्य पूजा कुमनं ॥ वलि
 ॥ मूडा ॥ ॥ तता तुम्बू नं वरी पूजनं ॥ आसनं ॥ नं सिंहासनाय
 नमः ॥ ॥ यथा ॥ लि ३ ॥ नं द्यां हगवनि वलिकायायनी तुम्बू नं व
 यो नमः ॥ गी पादकां पूजया मिनमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ नंदनेव

धीवर्णिगृह २ स्वाहा ॥ मूडा ॥ ॥ यत्रिवानपूजा ॥ अंबुकाय (श्रेयापूजा) ॥
 कं माह ग्यथे पापू ॥ वंको माथे पापू ॥ टं वेष् वी पापू ॥ नं वात्राः
 के पापू ॥ पं ॥ न्दा य (श्रेयापू) ॥ यं नाम भुये पापू ॥ मं महा लक्ष्मी पा
 पू ॥ वलि ॥ अंबुका आदि माह कारु ॥ देवर्णिगृह २ स्वाहा ॥ ॥ रु
 साया क्रमं वलि विषय पूजा कर्म ॥ मूडा ॥ ॥ कं कुरु पात पापू ॥
 गीं जी कुरु वद के नाथ पापू ॥ ॥ पूर्ण कुरु ग (श्रेयापू) ॥ यां सिद्धि या
 गिनी पापू ॥ ॥ अं सिद्धि नाम भुये पापू ॥ ॥ चर्व वलि ॥ ॥ दान स मूडा
 ॥ ॥ लं ॥ न्दा पापू ॥ ॥ नं अग्नि पापू ॥ मं यम पापू ॥ ॥ दूं नेर्ति या

पू ॥ वूं वनू पापू ॥ यूं वायू पापू ॥ मूं कुरु वन पापू ॥ ॥ दूं ॥ गी मना प्रापू ॥ अं
 अध पापू ॥ ॥ डं दुर्द्ध पापू ॥ ॥ देवर्णिगृह २ स्वाहा ॥ ॥ जं कोलाये पापू
 ॥ वलि ॥ ॥ आ वा रुनादि स्वर मूडा ॥ ॥ न्ति स्तुति पुरा ॥ ॥ ॥ ननाउ
 प्रवल्गु खलु पूजनं ॥ न्यास ॥ सां अंगुष्ठाणां नमः ॥ सां नरुनी त्यां स्वाहा
 ॥ ॥ मं मधुमाणां वषट् ॥ सो अनामिकायां दूं ॥ सो कं तिष्ठायां वी षट् ॥ सः
 करे नन वृष्ठायां श्रुमाय रुट् ॥ अंगुष्ठा मः ॥ सां हृदयाय नमः ॥ सी
 जिन म स्वाहा ॥ ॥ मं निखाये वषट् ॥ ॥ वेयाय दूं ॥ सो नरुपयाय वी
 षट् ॥ सः अमुा वरुट् ॥ ॥ न्ति न्यास ॥ ॥ आसनं ॥ ॥ यथा मनाय नमः

नवमा गतु या अतिवलि

ॐ सिंहासनाय नमः ॥ ॥ अर्चनं ॥ रुमवर्चुः किनः ॥ यजुः कात्यायनः ॥ अत्रिणी ॥
 आनूट इति संहिता मदिष्टा सत्र घातिनी ॥ अत्र पूर्यतमः ॥ ॥ यत्र सत्रम्
 कृत्वा मंत्रं सथु दावर्तने मन्त्र ॥ ॐ श्रीं ॥ अतः त्यागार्घ्यं मन्त्री यस्तान् वन्द
 तस्मिन्ना कृत्वा पूज्य धूय दीपने वन्द्यादि गीतं यत्र धुः कात्यायनी तुम्भूतं य
 त्री देवीणां नमः ॥ ॥ यथा ॥ अर्चि ॥ ॐ श्रीं ॥ गीतं यत्र धुः देवी गीता
 इकां पूज्यामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ नन्दने वधं वलिं गृह्ण २ स्त्राहा ॥ यानि म
 दा ॥ ॥ यत्रिवात्र पूजा ॥ अर्च ॥ श्रीं नूतन धुः दिष्टा गीता इका पू ॥ वलि ॥
 नन्दने वलिं गृह्ण २०० ॥ मूडा ॥ नूति उग्र धुः स्वधु पूजा ॥ ॥ ततो का
 त्यायनी स्वधु पूजनं ॥ आसनं ॥ ॐ यथासनाय नमः ॥ ॐ सिंहासना

नमः ॥ यथा ॥ अर्चि ॥ ॐ श्रीं ॥ महाद्वर्गवर्चुः कात्यायनी गीता पूजा ॥ ३ ॥ वलि ॥
 नन्दने वधं वलिं गृह्ण २ स्त्राहा ॥ यत्रिवात्र पूजा ॥ इकां या दिष्टा गीता पू
 जा ॥ वलि ॥ नन्दने वलिं गृह्ण २०० ॥ यानि मूडा ॥ नूति कात्यायनी स्वधु पूजा ॥ ॥
 ततो तुम्भूतं यत्रिवात्र पूजनं ॥ आसनं पूजा ॥ ॐ यथासनाय नमः ॥ ॐ सि
 हासनाय नमः ॥ यथा ॥ अर्चि ॥ ॐ श्रीं ॥ रुमवर्चुः किनः ॥ यजुः कात्यायनी गीता पू
 जा ॥ ३ ॥ वलि ॥ नन्दने वधं वलिं गृह्ण २०० ॥ यत्रिवात्र पूजनं ॥ अर्चुः का
 त्यायनी गीता पूजा ॥ ॥ वलि ॥ नन्दने वलिं गृह्ण २ स्त्राहा ॥
 यानि मूडा ॥ नूति तुम्भूतं यत्रिवात्र पूजा ॥ ॥ ततो महाकाल स्वधु
 पूजनं ॥ आसनं ॥ ॐ यथासनाय नमः ॥ यथा ॥ अर्चि ॥ ॐ श्रीं ॥ महाकाल

सर्वगुरुपुमईनाय पापू ॥३॥ वलि ॥ ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ ॐ हृदया
दिहानमः ॥ वलि ॥ ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ खड्ग मूडा केत ॥ ॐ मिमहाकास
खलु पूजा ॥ ॥ ततो कुरुयासखलु पूजनं ॥ आसनं ॥ जैननायनायनमः
॥ जयश्रुति ॥ ॐ कां कां कूं कूं कुरुयालाय सर्वकामदाय पापू ॥३॥ वलि ॥
ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ ॐ हृदयादिहानमः ॥ ॐ देवलि ॥ दलु मूडा ॥ ॐ मि
कुरुखलु पूजनं ॥ ॥ मवखलु मूडा ॥ थवरमनुनय्यालिमापु पूजाव
लि मूडा ॥ ॐ तिपनिवानेखलु पूजा ॥ ॥ नाममसिहमाउगुवभु मनुनैपू
जायाय ॥ ॐ कौडगुवभु खलु दिपनिवानेहानमः ॥ वलि मूडा ॥ ॥ ॐ
ततोमानेनयनी पूजनं ॥ न्यास ॥ सां हृदयादिकनखखेउ अन्त्यासः ॥

आसनपूजनं ॥ ॐ यशःपुतासनायनमः ॥ हूं म हानूडासनायनमः ॥
आनं ॥ ॐ पुतनूडासनायश्रुवकुंदिगुरुजां नितां । खडादीनिधुतीद
वां ॥ आयहंदिशसुन्दरी ॥ ॥ जयश्रुति ॥ ॐ गीसिद्धित श्रीदवी श्री
पापू ॥३॥ वलि ॥ ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ यो नि ॥ ॐ सिद्धयन्तर
हानकगीपापू ॥ वलि ॥ ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ अं वडा अदि सक
लपनिवानेहानमः ॥ वलि ॥ ॐ देवलिङ्ग २०० ॥ मूडा ॥ उगुव
भु सुचिह्नसथपूजायाय ॥ ॐ तिमानेनयनी पूजनं ॥ ॥ ततोली
मसनपूजनं ॥ न्यास ॥ ॥ हूं म मया हूं ॥ ॐ म्रमु सात्यानमः ॥

लौकिकनीत्यां स्वाहा ॥ हूं मधुमा स्वां वषट् ॥ हूं अनामिका स्वां हूं ॥ हों के नि
 शा स्वां वीषट् ॥ ८४ कनकन पृष्ठा स्वां अमुं यरुट् ॥ ॐ ति ॥ ॥ अंगन्यास
 ४ ॥ हों हृदयो यनमः ॥ ली गिरस स्वाहा ॥ हूं गिरा ये वषट् ॥ हों के वः
 या यरुट् ॥ ली नं रुय या य वीषट् ॥ ८४ अमुं यरुट् ॥ ॐ तिन्यासः ॥
 ॥ ॥ आसन पूजनं ॥ जें पद्मा सेना यनमः ॥ जें देवसेना यनमः ॥
 ॥ उ या पुत्रि ॥ जें हों हों हों हों ॥ ली ममना यदो ॥ दो पदी देवी गकि म
 दिता य गी पा पूज ॥ ३ ॥ व व ॥ लि ॥ ॐ देव वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥
 जिह्म सेना निमूडा ॥ ॥ ग न ॥ पूजनं ॥ जों मूषि हिनादि पा पुर्वे ल्यः
 १ ॥ कों को नि द वि या पूजं ॥ व लि ॥ १

मूडा २

गी पा पूज ॥ ॐ देव वलिं गृह्ण २ ० ० ॥ ॥ आसनं ॥ जें नरा सेना यनमः ॥ पू
 जा ॥ जें हों दि गम यना थ पा पूज ॥ व लि ॥ ॐ देव वलिं गृह्ण २ ० ० ॥ ॥ देवी पू
 जा ॥ आसनं ॥ जें नरा सेना यनमः ॥ पूजा ॥ जें सूर्य गिरा यी पा पूज ॥ व लि
 ॥ ॐ देव वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ मूडा ॥ ॐ ति ली ममन पूजा ॥ ॥ तना कल ग
 पूजनं ॥ न्यासः ॥ ॐ १ अमुं यरुट् ॥ कन ॥ मधुनं ॥ जों अमुं स्वाहा नमः
 १ ॥ ॐ स्वादिन कन अमुं न्यास या ये ॥ आसन पूजा ॥ जें वृक्षा सेना यन
 मः ॥ जें सिंहा सेना यनमः ॥ ॥ कन ॥ जें वन्दु काठि पला मं कु ग्य न्दा
 हं कन ॥ मधुनं ॥ जका स्वाहा वन ॥ ली नि विगु ह्यो हान दा मधु ॥ ॐ

संगमसामहालक्ष्मीलावनयया। मृत्पुष्पयसमासाकावन
 दोहयमंशुवध ॥ दयाः कलमन्दसंधृष्टो मूलकमकिष्यस ॥ ना
 नाहवध। गोहाहीदानकयूनमभितानुत्तुत्तावसंपूर्णसं
 स्मितापनमम्यत्रो ॥ धनपूर्य ॥ १ ॥ यथापुत्रि ॥ १ ॥ ईसं ॥ मृत्पुष्प
 यायमृतीवनीभक्तिरुदितायगीयापूज ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॐ देवलि
 गृह २०० ॥ ॥ पत्रिवानयूजा ॥ १ ॥ नूडवधुजायावक्रोपाभूतिना
 मदिह्य ४ गीयापू ॥ वलि ॥ १ ॥ ॐ दादिगुहनकृपयागनाभितिथि
 कुम्भकोमादिह्य ४ गीयापू ॥ वलि ॥ १ ॥ वक्रविष्णुनूडनूनीयन

सदाभितदिह्यगंगदिभक्तिविद्याकलाह्य ४ पुत्रिष्टायगीयापूज ॥ व
 लि ॥ ॐ देवलि गृह २०० ॥ जिमूलयानिमूडा ॥ ॐ निकलमपूजा ॥
 ॥ ॥ गुलपूजनं ॥ आसनं ॥ १ ॥ यथासनायनम ॥ ॥ पूजा ॥ १ ॥ ईसं
 ग्यकोमादिह्य ४ गीयापूज ॥ वलि ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं वनममनम ४ गीयापू
 ज ॥ ॐ देवलि गृह २०० ॥ धननूडा ॥ ॐ तिसगुलपूजनं ॥ ॥ म
 इनीसंपूजा ॥ १ ॥ ॐ श्रीं ॥ ॐ सर्वजनमाह्वयै गीयापूज ॥ वलि ॥ ॐ देवलि
 गृह २०० ॥ यानिमूडा ॥ ॐ तिमोहनीपूजा ॥ ॥ तन ४ कृष्णपूज
 नं ॥ न्यास ४ ॥ स ४ अमुयहृद ॥ सां अमुखाह्वानम ४ ॐ ह्यादिनक

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्रीमत्पूजा ॥ ॐ कान्तासनाय नमः ॥ श्री ॥ ॐ
लाक्षात्रसतिरादवी पद्मनाभसमपुत्रा । सर्वत्रस्तु विविर्जांगीशु । त्रिकाल
तविग्रहा ॥ श्रीसादगुरुजादवी नानापुत्रन (लाघुता । नानात्रसधनीदवीगु
लोक्षनान्यविद्यते ॥ खड्गयामांकुम्भसैद्य कथालकलिमध्वज । नथान
वतथाद्यन्मनवमनुवनपदं ॥ रुद्रकंधनूयामां च खड्गाङ्ग सकमपु
र्ल । मूलमूळनवे पूञ्जगन्नालिं यो हवे कन ॥ मलुर्लवद्वयित्वा
उमदीरुता विसर्पिता । प्रसन्निपातकासर्वावा मृता मृतकोद्भवा ॥ श्री
नपूष्प ॥ रुपाञ्जलि ॥ ॐ वाँ वाँ वूँ वूँ वावूणी कूलकू म्हाये गाय

पूजा ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॐ देवलिं गृह्ण ०० ॥ ॥ यत्रिवानपूजनं ॥ यं यं नृनल्लेख्य ३ या
 पू ॥ वलि ॥ ॥ जे जयादि नूडय गुदि वक्राध्यादि यत्रिवानल्लेख्य नमः ४ या ॥
 वलि ॥ सां हृदयादि ल्लेख्य नमः ॥ वलि ॥ ॐ देवलिं गृह्ण २०० ॥ धानिमूडा
 कर्त ॥ ॐ ति ॥ ॥ आयिनी कर्म पूजानं ॥ आसनं ॥ जे कात्रासनय
 नमः ॥ ॥ ॥ आदू गुथकागुलि पूजा ॥ जे नंदमकलायूकाये कर्मयन
 मः ॥ वलि ॥ ॥ गायव गुलि थकागुलि स पूजा आसन उ। थं ॥ पूजा ॥
 जे सूं ॥ उमकलायूकाये कर्मयनमः ॥ वलि ॥ ॥ घानू गुथकागु
 लि स पूजा ॥ आसन उ। थं पूजा ॥ जे इंदमकलायूकाये कर्मयनमः

सर्वं शुभं नवा सिनं ॥ आन वृष्यं नमः ॥ ॥ रुपा अति ॥ कां कीं कूं कूं
कृष्णालया पायू ॥ ३ ॥ वलि ॥ जें कां कीं कूं कूं कृष्णालया नूं देः
मया पूषा पूषदीय पूजा यथायनीतं वलिं गृह्ण २ कृष्ण २ मृग २ ख २ ल
२ खादि २ मद्राजामना धियनय कमस्वव्रदाममस्वाहा ॥ जें जूं जूं
जुजिगा अयसहेन वें ल्य ॥ मयनिवा नखा वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ द
लु मूडा केन ॥ नू नि कृष्णालया वलिं ॥ ॥ नतो यानू पु वलिं ॥
न्यासः ॥ आसर्न ॥ जें यमा सनायनमः ॥ ॥ धार्न ॥ मद्रा पु ना सना देवी

नकाजीववदुजग। उमनूख हा झ ह हा ब विन्दू मू डा च का यः
 तं ॥ अ न पृथं न मः ॥ ॥ अ यां ज लि ॥ नें चाँ वौ वूँ वौ वा म अ
 द वि गी या पू ज ॥ व लि ॥ ॐ व लि गृ द्ग र सा हा ॥ ॐ वूँ ॥ ॐ कूं
 उ ग व अ दे वी गी या पू ज ॥ व लि ॥ ॐ सि दि वा मू ॐ ये व ॐ
 लि गृ द्ग र सा हा ॥ ॐ डा डि या व जा ना ॐ ध न पू र्ण नि त्रि का म नू
 प पी ॥ ॐ व लि गृ द्ग र सा हा ॥ ॐ नू ड व अ दि क या दि खो व लि
 गृ द्ग र सा हा ॥ ॐ व क्ता अ दि च उ ष षी या नि ती खो व लि ॐ

नसुन्दरीदशैः ॥ दैनेवर्षवलि गृहस्वाहा ॥ जीर्णं महाविष्णुसुन्दरीदशैः
 सर्वेष्टा आवननदत्तादित्योस पावेपनेष्टा ॥ दैवर्षिगृहस्वाहा ॥ ॥
 पवित्रानवलि ॥ मंहाका नागवलि गृहस्वाहा ॥ इमं महावनवीनम्भनाधियक
 यवलि गृहस्वाहा ॥ जं सर्वेष्टा रुतया गिनीष्टा आकागवा निधीष्टा वलि
 गृहस्वाहा ॥ ॥ जं अमिता मदिह तुकादि कण्ठ्या वलि गृहस्वाहा ॥ जं
 गुहनादिबधुदि अकादिज यादि ॥ इन्द्रादित्या मपुष्टाष्टा साक्षेष्टा म
 वयनिवानसदित्त्या ॥ सर्वाभान्यूनर सिद्धिं देहि इमं इष्टवर्षिगृहस्वा
 हा ॥ ॥ समय काय ॥

त्वाकमहावलि विद्य ॥ जं क्रीं सोऽं देवक्राधुनावा दिविगगनतलरुतल
 निरुलवा ॥ पातावननवासेलितयवनया र्यगृहस्वाहा ॥ केशाया
 ॥ अघयी ॥ अदिषुसकल गणधूयदीयासवाद्यैः ॥ अष्टातादश्यासदनि ॥ गुरु
 वलि विधिनामानुवीन लुवन्द्या ॥ ॥ जं आयुर्द हि यगुं देहि युष्मा न्देहि न
 ॥ येव ॥ धनविद्याज ॥ अदहि सर्वगान्तिं कृन्तु वलि गृहस्वाहा ॥ ॥
 जं समस्तमनुयी ॥ ॥ एादिना कानूक्यादिष्टा वलि गृहस्वाहा ॥ ॥
 निवलिभाली ॥ ॥ तमावननादि उयदाहर्न ॥ वन्दन ॥ जं क्रीं सो

प्रवक्ष्यामि सा अथः सगलयत्रिवात्रहः नूदं नेव द्यं निवदया मित्रम
 ॥ ४ ॥ वं व ग्रा स त ॥ ॥ समय का य नार्न ॥ ॥ न र्च न या य री ग प
 पुन ॥ ॐ श्रीं सों श्रीं श्रीं महा वि पूर सुन्दरी देवी ग्रा उ गु व धुं दे वी दि
 सा श्रीं सा यू थं स वा हु नां स य त्रि वा रां ले व व स हि तां न र्च या मि
 नमः स्वा हा ॥ १ ॥ ३ ॥ रु ल मू ला दि का ॥ ॐ श्रीं सों श्रीं वि पूर सुन्दरी
 देवी ग्रा उ गु व धुं दि स ग ल य त्रि वा त्र हः नू दं रु ल मू ला दि य का ना दि कं
 नि व द या मि त्र मः ॥ ॥ पु न ना वा म नी यं ॥ ॐ श्रीं सों श्रीं श्रीं वि पूर सु

३

देवी ग्रा उ गु व धुं दि स ग ल य त्रि वा त्र हः पु न ना वा म नी यं त्र मः ॥ ॥ ए
 ति हा ॥ ॐ श्रीं सों श्रीं श्रीं ग्रा उ गु व धुं दि ग्रा वि पूर सुन्दरी देवी स ग ल य त्रि
 वा राः सु पु ति स्था व र दा ह व न्तु ॥ ॥ ना य हा त्र ॥ ॥ ज य या य ॥
 मा ला का या व र गं स रं ख न हा य ॥ रु द्ध कं ॥ ॥ नमः ॥ ४ ॥ व स्रां कं
 क य ॥ पू जा ॥ श्रीं अ रु मा ला ये नमः ॥ २ ॥ ॥ क वि ल न मू ल ज य या
 य ॥ १० ॥ ॥ ज य स म र्च नं ॥ ॥ उ गु व धुं या ॥ ५ ॥ ॥ का ला य धी
 ॥ ॐ श्रीं सः स्वा हा ॥ १० ॥ ॥ रु मू र ग्वी या ॥ ॐ श्रीं स्वा हा ॥ १० ॥ ॥ ज य स
 म र्च नं या य क य य ति या य मा ल क ले ख नं ॥ न न ॥ नू दं ज यं

[illegible]

नन्दसंकाह्यभाहृद्वनिर्हति। इः खण्डयपलिम्नानवदनं याहि
मोक्षिव ॥ मायाकृणुलिनीक्रियामधूमतीकालीकलामात्रिणीमा
तक्षीविजयाऊषाहृगवनीदवीशिवानाम्बुवी। गङ्गीगङ्गाकनकवल्
लज्जिनयनीवाग्वादिनीहरेवती। ऊर्वाकांतीक्रियूनायूनायनतना
मायाकृमात्रीत्वसि ॥ ॥ यादवीमधूकेरुपमथनीयावल्गुमू
लुर्दिनी। यामाद्यामहिषासूत्रपमथनी। यात्रकावीज्रासनी। या
साधुमृनिशुमृदेदलनीयादिवदवागुनी। सादवीममेरुकन

रुजतनी यन्मि सदा पादुमां ॥ पीता का ह्या यवी साह त्रिमहिष पृष्ठं
पाद गायानि न ज्ञा ख म् वा लीं वडा किं दितित न य ऊ यी मूल च कं
सका धी । रु रं चापं मृ वा वे ल व रु धे दे ति वे पा म को ॥ यी वि न्द्र मृ
ले नै वा नि सु र म हि ष त्रि धा य ठ लां स सु पा लां ॥ ॥ न का मृ पु मृ
र मृ ॥ रु त्रि म हि ष स मा कानि नी मूल घा टी वा रु ह्या मे ष म ध्व त्रि म हि
सु क ने ४ म कि वा लीं मृ वा ॥ दे के सो द र्य व ऊं ध न नि गु र स ना तां
व मूलं स च कं वा म रु ठं स पा मं द नू ज कू र ह ना वा य मं र ऊं नी या ॥

ने म स्यं द र्य लं क रु दे म नू क य तं ला मृ लं का य के सा नां द वी नो मि नि रु
र य स क न ह वी म रु द र्य न काली ॥ ॥ ज य नी म रु ला काली रु ड काली
का या ति नी ने दू म्ना रु मा नि वा धा गी 'सु धा' 'स्वा हा' न मा मु ने ॥ ॥ नू ड व
मु ष व मु ष व (मु ष व मु ना यिका च मु ष व व नी व मु नू या ति वः
उ न मा मु ॥ ॥ ज या वे वि ऊ या वे व अ जि नां वां य न जि ता । उ मृ नी रु
मृ नी वे व मा रु नो क र्ष नी न म ४ ॥ ॥ वा म्नी मा रु ष व नी वे व को मा नी
वे मृ वी ग था । वा ना ही न्द्रा वी चा मृ मु म हा रु श्री न मा मु ने ॥ ॥ ज य

[illegible]

मालाश्रुदिनमालकस्तुत्याय ॥ रुतमासुवस्तुवराजकवचगतनाम
सहस्रनाममूलयास्तुत्यायाय ॥ ॥ महाभायास्तुत्यनमास ॥ वल
नूकमवस्तुत्या ॥ लोकमासलोकमाग्रीमेवलीनखाय ॥ ॥ ग्रीमेव
लीमलुलाकुकमपदनिदिगानन्दमकि ॥ सुलीमागृष्टिन्नायवदुष्कं
पूनरपिचवुन ॥ यश्चकंचान्यषड् ॥ वलानयश्चकान्य ॥ पूनरपिचवु
नतरुतामलुलदं ॥ संगृष्टंमलुलदंयननस्मिनमनगुनूवरं ॥ रवैग्री
कृजं ॥ ॥ रुमासुति ॥ पायादं पायकमादं पायात्मापायसंरुव ।

जाहि मादवदं वं गिः सर्वपापहृ नारुव ॥ अन्तरुमात्रं नास्ति त्वमवध
 त्रयं मम ॥ तस्मात्कात्रं चरावेनत्र क्रमांज गदीभ्य नि ॥ अथवाधसहस्र
 नि कीयकं हर्निर्गमया ॥ दासाह मिनिमांमत्वा क्रमस्वपत्रमं ठवत्र ॥
 यथावाचप हानात्तं कवचैरु वहुवानर्ण ॥ तनुदवविद्याटानां गानि कुरु
 वहुवानर्ण ॥ वाक् ॥ एतद्वाज (गण ॥) अत्र दासः संवर्गकृ कयधना
 दि कयथायि कामः ॥ मात्र दीय महासमीपाव ॥ अस्वैष्टयवतादिगा
 उग्रवधुदयचन विष्णोत्सर्व विधियनिपुत्रु ममु ॥ अन्तरुमात्रं
 ॥ कतन ॥ नमस्कार याय ॥ यश्च जनः अष्टा जनः दधुपनामने

१ गवयश्चक्रि लक्ष्मि हनप १

पुदक्रि लक्ष्मि याय ॥ ५ ॥ नवमी पूजा श्रवसाय भुपूजा कोमात्री पूजाया
 यथन ॥ वार्क कायामा कोयाय ॥ ॥ अष्टिया श्रवसाथन समय का
 यन्मानस हि नन ॥ ॥ तथैव ॥ गुनूतर्धं गुनूया गुयातीर्थन ॥
 नै स्वादात् अन्न नदनाथ गी पूर्वुत्त अन्वाभायादिका तथैवामिनमः ॥ ॥ नै
 स्वादात् गीत श्री नाजनाथ यनायत्र गुनू गीयाइका तथैवामिनमः ॥ ॥ नै स्वा
 दाभा विद्या नदनाथ यत्र मस्त्रिगुनू गीयाइका तथैवामिनमः ॥ ॥ नै स्वा
 दाद्विद्यो य गुनू न गीयाइ तथैव ॥ ॥ नै स्वादा सिद्धो घ गुनू न गीयाइ क
 र्य ॥ ॥ नै स्वादा माने वो घ गुनू न गीयाइ तथैव ॥ ॥ नै स्वादा सर्व गुनू न तथैव

यामितमः ॥ २ ॥ ॥ हागयागुमृगनवलिदवतयनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अमि
 नाक्षाय प्रभु नववक्त्राद्यादिश्रुमाह कादाकिनी पूजयह नगापा
 इकांतय या मि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं हनुकादिमहाकालकवद्रकवक्रुड
 दिनेग्रायाद्रुतय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वरुतयः ॥ ग्रायाद्रुतयः ॥ ॥ ग्रापा
 न ॥ मूलं स्यादग्रायामहाविपुत्रसुन्दरी देवी ग्रायाद्रुतय या मि नमः ॥ २ ॥
 उगुवधुतयनं ॥ मूलं ग्राउगुवधुतय देवी ग्रायाद्रुतय ॥ २ ॥ ॥ विवा
 नं ॥ हागयागुमृगन ॥ ॐ ह्रीं श्रीं साक्षात् सायुधीं सवाहनां सपविवात्रां

हवमहिर्ग्रायाद्रुतय या मि ॥ ३ ॥ ॥ अर्घ्यामीश्वर्यालेखनश्रुतिषक
 याय ॥ वाक् ॥ अस्मत् सानदीया प्रभी पूजा कर्मविश्रुतिषक सुमूलम
 सु ॥ नंगदिमत्रिने ॥ पूर्व ॥ गन्धा कर्तनयल्लव ॥ गणाह मलिमि
 या मि ॥ गदा निष्क विना ॥ ॥ वरुसिधुनतिय ॥ चन्दनं लयि
 तं पूज्यं यविर्गं पापनाशनं ॥ अयदं हवत निर्यन श्रीमं कतिवर्द्ध
 नं ॥ ॥ देवा ग्रीवा दं ॥ करन ॥ ॐ दहित श्रीधनं धान्यं नाश्रु
 श्रीपूज ॥ पूज ॥ १ ॥ सादं कनू भद वि सुन्दरी यनमयवरी ॥ ॥ स्वा

नको कायम तव कृतिन डोगु रुक्काय ज्ञात्माभीर्वाविय ॥ थवने सक
 ल सुविद्य ॥ यत्र मान त्व संदाह पुमाद तव निरु निद्रा खजय यत्रि
 मान वदने पाहि मां भिव ॥ ॥ येडे की मझ लति ॥ ॥ ॥
 न्यानिका ये द्वा वया (थं) मस गुतिन ॥ ॥ जे अरु ध्यानि मः ॥ ॥ न्यादि
 करे वद कन्या मः ॥ ॥ ॥ निरु त्वने ना सिय ॥ ॥ जे आत्म तत्वाय स्वाः
 दा ॥ ॥ की विद्या तत्वाय स्वादा ॥ ॥ मो भिव तत्वाय स्वादा ॥ ॥ धर्म मधुल
 (थं) ॥ ॥ अर्था सवन स्वा न तने ॥ ॥ ह्यार्थ याय ॥ ॥ ह्यन दाज (मधुः)

को ४

ध्वं वदा सः सर्व मरु रुय ध तो दिजय पाफि कामः भव दीय म
 दाष्टमी पाव ध्य य थ भ कि डय वा न भ पूजा सी पू ध्यार्थ कृत कर्म
 स कि (न) श्री सूर्याय अर्घ्य नमः ॥ पूषी नमः ॥ ॥ ॥ महाष्टमी पू
 जा विधि समाप्तः ॥ ॥ विहा डाय मा न सं समये विद्य ॥ ॥ अति पा
 उम दं द द्या ॥ ॥ नृ हीत्वा पत्र मे भवनी ॥ ॥ श्री कृष्ण मुरु (न) द कि जय दं
 विविर्पू द रु ॥ ॥ ॥ समय काया डा ॥ ॥ निर स गुरु तर्पण ॥ ॥ नृ गल समू
 ल तर्पण या य ॥ ॥ ॥ पूमं त र्पण ॥ ॥ अविना (म) एव इह अऊना मः

तमवय । नमो गणेशाय कर्तुं नास्ति नाशः श्रीसुखसंघद ॥ वाष्पकाष्ठय
 गणेशमहासमीपूजासंपूर्णार्थसमयचक्रमायुनानाग्यमेवार्थ
 जनधनलसक्तिसक्तानवृद्धिस्तु यथागममुक्तं हस्तपदायनाहवन्दु
 ॥ विन्दुर्गर्भे ॥ ॥ जेकीं सो धर्कं विवात्रस्त्रीकानयाय ॥ नेवयग्रहर्न
 लाहानसिय ॥ ॥ वरि विरिय ॥ यथेष्टं शत्रुयित्वा कर्त्तव्यं ॥ लायवा
 दवयागमगंधानयमानद्विर्ध ॥ धर्मोदिमान्कर्त्तव्यं यानदाहर्न
 र्ध ॥ इगुयाकलनदयकाडा ॥ ॥ वरद्विस्तनिह मन्त्रविय ॥ ॥

दक्षिण

महासमीपूजासमाप्त ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥
 श्रीकृष्णाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः पापूज ॥
 शिविष्णुया ॥ श्रीसंज्ञानाय नमः ॥ पापूज ॥
 त्वज्ज्यानिनीया ॥ श्रीगुरुदेव्यानिनीयवीपापूज ॥

स्वेनमारुगवर्त्ये ॥ अथमहानवमीपूजनं ॥ स्नानादिनिष्कर्मधून
क ॥ ॥ ह्रीं वव जिह्या नवसिस्तन ॥ ॥ दवस्नानयवास्तुतादि ॥
चन्दनादिश्वसे ॥ स्नानकार्य ॥ ॥ ह्यादिमुकलतामालकहव
यार्थ ॥ ॥ ततोदवपूजा ॥ जित्तवननासिय ३ ॥ ॥ ह्यार्थय
य ॥ अयादि ॥ हानद्वाज (गणेश्वरदासः सर्वगुरुदेवत्वधना
दिजयवाफिकामः ॥ भारदीयमहानवमीपार्वत्युद्वागादिवाय
थगकिवसिस्हितयाथगकिर्यवायवात्रेवगस्वदवता

दिशोऽगुवभुदवीपूजनकर्तुं गीसूर्याय नमः ॥ पूष्यं नमः ॥
॥ ॥ ततोमहाष्टमीपूजायादार्थं नवमीयापूजायायजपस्तुत
स्वधूनक ॥ ॥ ततोऽवपिपूजा ॥ वृषिस्त्रेखनसेनवलितयव
तसिन्दुनाकपूष्यतयावपूजायाय ॥ ॥ ग्याभ्रति ॥ जेः कीं स्व
आयनमः ॥ ३ ॥ जेः वागभ्योनमः ॥ जेः वक्रविष्णुमहेश्वनाय
नमः ॥ ॥ मुनि ॥ जेः स्वभ्रायखलूनाभाय भक्तिकायायतत्यनः
॥ यमुकुल्ययागीर्ष्वस्वभ्रनाथनभामुने ॥ कतन ॥ समयकार्य ॥

ॐ नित्यं च पूजा ॥ ॥ गंगायाः पूजनं ॥ गुहिल्लाह नथूनात्वाथ क
हुसिलावे पमुनउलुनभायकीनय ॥ धसनपूर्वमायावपमुपूज
नयाय ॥ ॥ अर्घ्यायां लेखनदाय ॥ ॐ जूं म्माय रुट ॥ धर्कं कर्लं ख
कायावधानसम्रादियेयुया क्रमयि याव नवनेव सिमनय ३ ॥
॥ ॥ वहुः संस्कार याय ॥ रुट धर्कं अर्घ्यायां लेखनदाय ॥ रुट ३
धर्कं पमुया मिनेसवाना पविदेनदाय ॥ ३ ॥ रुट धर्कं अर्घ्यायां लेखनदाय
याय ॥ वः धर्कं धने मूडाकेन ॥ रुट ३ धर्कं पमुया कनालउयदि

। ग्वन्तनयाय ॥ ॐ नमः ॥ ॥ यमुया भिरम थि र्मनय ॥ नैकी र्मा ॥ ३ ॥
 ॥ मधवये यमुधा ३ ॥ ॥ यमुगर्घ्या यार्त्त खन स्नान याचके ॥ ॐ दं स्नान
 न गमूक वलन मः ॥ ॥ क्रादू धन ॥ सिंदूर वं नयके ॥ ॐ दं न के
 वन्दन सिंदूर गमूक वलय न मः ॥ ॥ क्रादू स्नान र्त्त कुवके ॥
 ॥ न त्पूष्य गमूक वलय न मः ॥ ॥ धूप ॥ ॥ न ष धूया गमूक वलय
 य न मः ॥ दीप ॥ ॥ न ष दीया गमूक वलय न मः ॥ ॥ पूजा यायू
 के स्नान येत न ॥ ॐ ॥ क्राग वलय न मः ॥ ३ ॥ ॥ धवा र्त्त म पूजा गुति

ॐ ॥ ॥ हं सदतसा हं स पूजा ॥ हं हं स वलथ नमः ॥ ३ ॥ मदत
सामू माल ॥ ॐ ति ॥ ॥ कू कू ठ द न सा खा पूजा थ गुहिन ॥ कू
कू कू ठ वलथ नमः ॥ ३ ॥ खा मदत सामू माल ॥ ॐ ति ॥ ॥ ॥
कं लं ख का या व चाल स या द स या त आ गं गायत्री मनु कर्म ॥ यं च
गुणो गाय त्रि द्र ह वि ग्व क र्मा ली धी महि । त न्ना जी व १ पु थो द
या ७ ॥ ॐ ति क्का ग गायत्री ॥ ॥ त ना हं स गायत्री ॥ हं हं स तत्वा
य वि द्र हं स व र्ग म मि नी धी महि । त न्ना वलि २ पु थो द या ७ ॥

ॐ ति हं स गायत्री ॥ हं स दतसा मदत सामू माल ॥ ॥ खा श्रवसा
गायत्री मू माल पूजा सा उ सं क स्य थ तं नं ग क गायत्री मू माल ॥ ॥
पं नु द का स या तं मूल नं गु या ॐ लि न य व ३ ॥ ॥ कं डा दं य गु वा ध
या य ॥ य ह्ना थ व ल थ स ह्ना . स य भ व स्य र्थं गु वा । अ त स्त्वी या ट या भ
य त स्मा य ह्ना व ल थ व ४ ॥ ॐ हं सा कं य त्रि ल य ह्ना द व व यूर्ध्व न । मा द
स्य पु थि त सा ह्ना या व दि न्द्रा व गु र्ध्व ४ ॥ क मा कं त न ॥ ॐ ति य गु वा ध ४
४ ॥ ॥ थ न सं क स्य या य ॥ कू मं तिल श्रव सां क ग क न श्रव सां य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दशमस्कन्ध ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 श्रीकृष्ण उवाच ॥

आहूतश्च सांलंखसु हित न कर्तव्यं युष्माकं हाय कंन मवाक् ॥ अथ
 तव नाहं किं ॥ अथादि ॥ हात्र हाज (म) गन्धर्व दामः सर्व गुरु कयध
 नादि ऊय पाफि कामः साव दी यम हान वसी या वल्लभा श्रीस्व सुद वना
 दि गा ३ उग्र वधु पूजा सा म्म नार्थ गा स्व सुद वना ये गा उग्र वधु द वी सा
 (ज) स्व सा य (ध) स्वः स्वाह न स्वः सव निवा न स्वः ॥ गा गुरु व व न नः ॥ मं को
 गं व द्धि दे व नं तु र्य म हं घा ट यि षु ॥ ॥ हं स या वाक् ॥ वि। म। व ॥ ॥
 मं हं सं व जाय नि दे वं तु र्य म हं घा ट यि षु ॥ ॥ मा मु वू उ स्व ॥ ॥ मं

कर्कशा मूक दे व नं तु र्य म हं ॥ ॥ मू हाय कं ॥ अहं ॥ धर्कं हा ग वि
 य ॥ मू लु काय ॥ मू लु स म न स म य नं ॥ वा क न का य ॥ ॥ कि यं गु प्
 ज नं ॥



॥ नमो गणपतये नमः ॥ श्री कोमार्थे नमः ॥ ॥ अथ कोमानी पूजा ॥ मातृ क
तात्र सावक ॥ स्नानयावकं वनस्नान आदि मातृ क तय ॥ ॥ पूजा ॥ कृष्ण
याथं शिवे न च सिय ३ ॥ ॥ सूर्यार्घ्याय ॥ कस्तान वनं स्वकृद तय ॥
आद्यादि ॥ हान द्वाज (गङ्गा) नदी नदा सः सर्वं गङ्गा क य धनादि जय या फि
कामः सात्र दीय महान वमी पार्वथ्य श्री २ स्व द वतादि श्री उगु व भू पूजा
साङ्ग तार्थ श्री कोमानी जा गभर्वन निमित्तार्थ कर्तुं श्री सूर्याय नमः ॥
पूर्य २ ॥ ॥ नमो न्यास ॥ गल गुरु भुम स्कात्र ॥ मूल ॥ दधूस ॥ श्री कोमानी
स्वद व तार्थे नमः ॥ ॥ पाप्मा यामं हवर्थ ॥ ॥ न्यासः ॥ वगन साहो

तव्य ॥ कः अमुय रुट् ॥ ॥ कत्र न्यास ॥ कां अमु साह्यां नमः ॥ कै
तर्जनी त्यां स्वाहा ॥ कूम म्भ माह्यां वषट् ॥ कै अनामिका त्यां हुं ॥ को
कनिष्ठां वीषट् ॥ कः कत्र तं वृष्टा त्यां अमुय रुट् ॥ ॥ अत्र न्यासः ॥
कां हृदयाय नमः ॥ कीं मित्र स स्वाहा ॥ कूं मिखाय वषट् ॥ कै क
ववाय हुं ॥ को नज्जु याय वीषट् ॥ कः अमुय रुट् ॥ ॥ अति न्या
स ॥ ॥ अत्र याग पूजा नाह स से याय ॥ कां हृदयाय नमः ॥ अर्च
को मित्र सः ॥ कूं मिखाय ॥ कै क ववाय ॥ को नज्जु याय ॥ कः

अशुभाय नमः ॥ वत्सांकन ॥ जे वन्दना करू पुर्यां नमः ॥ धनमूडा नाल
रुय दिग्बन्धन ॥ धनं खन दाल पूजा साम गीथ मं हाय ॥ पूजा रु
त्र (मधन ॥ ॥ अर्घ्य पात्र पूजा ॥ उं साम म धुला य नमः ॥ षु उ म
न पूजा ॥ सां हृद या य नमः ॥ ज वै ॥ सीं गिर मे २ ॥ सूं गि खाये २ ॥ से
क व चाय २ ॥ सो नं गु गु या य २ ॥ सः अशुभाय २ ॥ वत्सांकन य ॥ जे
वन्दना करू पुर्यां नमः ॥ मूलन पूय (मधन य ३ ॥ धन योनि मूडा
नाल रुय दिग्बन्धन ॥ इति गी पात्र स्थापन ॥ ॥ आत्म पूजा ॥ व

तन नित्य ॥ स्नानं कुर्या ॥ निवस गुरु तथै ल ॥ निवस पूजा याय ॥ जे अ
त्मनं पा पूजा नमः ॥ ३ ॥ धूनि द्याय ॥ आवाहनं ॥ गी सवर्ला म धुलानं
कमपद निदि तानन्द ग कि सुली मा सु खिं न्याये च दु क्तं त्वे क ल कु ल
गतं येश्व कं चा न्याय दं । च त्वा न ४ यश्च को न्य पून त पि य दु त्र ४ त ॥ त्व
ता म धु ल दं सै सु र्थ य न त स्मि न म त गु न व नं रे व रं गी क र्श मं ॥ धूं व
लि स स्वा य क त न ॥ ॥ त न य श्व व लि वि य ॥ वां व द क ना थ य व लि
गृ क र स्वा हा ॥ कां क र या ला य व लि गृ क र स्वा हा ॥ यां यो नि नी था

वलिंगुट्टर स्वाहा ॥ वां वासु भुये वलिंगुट्टर स्वाहा ॥ लंग वन य वलि
गुट्टर स्वाहा ॥ मूडा ॥ समय काय ॥ विन्दु तर्क ॥ श्री नमः ॥ ३ ॥
ति ॥ ॥ देवा वाहन ॥ स्नानन को मारी हथि ह्यं तय मूलन धन ३ ॥ ॥ वा
न पूजा ॥ कां क गुया लाय पा पूजा ॥ वां वद क नां थय पा पूजा ॥ गं ग व
पतय पा पूजा ॥ ॥ देवलि गुट्टर स्वाहा ॥ ३ ॥ तगा को मारी पूजा ॥ आस
न ॥ श्री आधन ग कथन मः ॥ ॥ मे म हाम यूना सनायन मः ॥ ॥ आन ॥
मे म हाम यूना मानूटां न क व धुं व धुं । म कि माला विन्दु मूडा ह नां को
मारिकां रुड ॥ आन पूर्यं न मः ॥ क सी व न् अ र्घ्या र्ख र्ख र्ख ॥ की ज

तत्या घा र्घ्या व म नीय स्नान चन्दन सिन्दु ना रुत पूषा धूप दीप रुल ने व घा
दि मी को मारी देवी न मः ॥ ॥ गुया अरु लि ॥ ॥ नं कां की कूं मी श्री म ह
की मारी देवी गां पा ड कां पूजा या मि न मः ॥ ३ ॥ धन वलि ॥ वि थ ३ ॥
या नि मूडा ॥ ॥ प रि वा व पूजन ॥ उं उं च धु र्ख व व श्री पा पू ॥ ॥ वलि ॥
मूडा ॥ ॥ कां ह द या य न मः ॥ कां मि न म न मः ॥ कूं गि र्वा य न मः ॥ कूं
क व वा य न मः ॥ को न रु रु या य न मः ॥ क ४ अ म्ना य न मः ॥ ॥ देव लि
गुट्टर स्वाहा ॥ ॥ अं अं अ मि ना क्ता य र्ख र्ख र्ख र्ख श्री पा पूजा ॥ ॥ देव लि

गृहस्वाहा ॥ अं वक्रा आद्या स माह का ह्या भी पा पूज ॥ ॐ देवलिं गृह
स्वाहा ॥ ॥ उग्वधु पूजा ॥ ॐ ह्रीं श्री उग्वधु देवी भी पा पूज ॥ ३ ॥ ॐ
देवलिं गृहस्वाहा ॥ यानि मू ॥ ॥ मूल पूजा ॥ ॥ उग्वधु लि ॥ ॐ
कीं श्रीं श्री महा विपुन सुन्दरी देवी भी पा पूज ॥ ३ ॥ ॐ देवलिं गृहस्वा
हा ॥ यानि मू ॥ ॥ ग्वठजा पूजा ॥ ॥ गं गल गायन ॥ वलि ॥ ॥ सगु
ल पूजा ॥ ॥ कां जग्वस्त्रा मा दिव्या नमः ॥ वलि ॥ ॥ वलि मूल ॥ कां रुद्र
पालाय वलिं गृहस्वाहा ॥ ॥ उर्व ॥ वा विदू कना थाय ॥ ॥ गं गल यन थं ॥ ॥ यां

यानि नी ह्या ॥ वां वाम धु यै वलिं ॥ को को मानी देवी ॥ ॐ देव लिं गृहस्वा
हा ॥ ॥ जं नै त्र कल पवि वा न ह्या वलिं गृहस्वाहा ॥ ॥ निरुया थं वलि वि
य मूल आदि स्तुयात् ॥ ॥ नै वलि मूल ॥ ॥ चन्दना दि उ पया न ल न या व
पूजा या य ॥ ॥ श्री ॐ देव नन्दन को मानी देवी नमः ॥ थं वा क्तन ॥ ॐ देव
क वन्दन ॥ ॐ दे सिंदूर ॥ ॐ दे म कर्त ॥ ॥ ग व धू य ॥ ॥ ग व दी
प ॥ ॥ ॐ दे नै व धी ॥ समय न्या क्ता य ॥ तर्पण ॥ ॥ श्री को मानी देवी भी
पाइ का तर्पण या मि नमः ॥ ३ ॥ मूल तर्पण ॥ उग्वधु तर्पण ॥ पवि वा

नमोऽस्तु ॥ ह्रव (थं) ॥ घून ना वमननं ॥ मुख मुद्रि क्राय रुलादि ॥ ता य हा
स ॥ स पु ति षा व र दा रु व नु ॥ ॥ जय या य ॥ कुंरी स्वाहा ॥ १० ॥ मूल १०
उ ग व धु या १० ॥ जय स म र्य मं ॥ नू दं जयं गृ हा ॥ द स्वा हा ॥ ॥ मनु
ल ॥ म्हा ग या य ॥ क र्म मं व द् क मं व ग (ध मं) वि ॥ म्हा व र कं । सै पू अ
वि धि व द् क र्मा न मा मि च रि द व कं ॥ को मा नी म यू ना तू रा . न का क्षी वः
का वा स सी । ग क्क कं वि न्द्र मू डा व . गु अ म्भ वी न भा मु न् ॥ प त्र मा न न्द
सं द्रा ह नि ॥ जय नी म अ ला का ली रु ड का ली क पा लि नी । इ र्ग म क मा

मि वा धा गी स्वा हा स्व धा न भा मु न् ॥ श्री सं व र्ण म म्भु ला नं क म प द ति दि ता
न न्द ग कि स री मा . सृ रि न्या य व द् क र्मा न मा मि च रि द व कं या च व
कं । च स्वा न ४ पं अ का च ४ पू न र पि च द् व त ल गा म भु ल दं . सै सृ र्यं य न
त म्भ न म त गु नू व र्णं ४ न र्वं गी क्क मं ॥ अ प ना र स ह मा नी ति ॥ रा
न द्रा ज (ग म्भ) नू र्ग य न दा स ४ स र्वे ग क्क क य ध ना दि जय पा फि का म ४ सा
न दी य म ह्ना न व सी पा र्व ॥ गी स्त र्व द व ना दि गी उ ग व धु पू जा सा म्भ
ता र्थं गी को मा नी जा म र्व न वि (धे) त र्व वि धि य रि पू र्ण म म्भु ॥ न म

स्तुतयाय ॥ ५ ॥ समयकाय वाकनन्यां काय ॥ ॥ नर्यं ॥ मूल को
 मानी उगुव भु दि नर्यं ॥ ॥ वृत्तं ॥ ॥ सगुण सकतन ॥ अमु
 य रुद्र ॥ सगुण काय ॥ माहनी हति रु याव काय ॥ माहनी सन के
 सते ॥ इवने यागु काय माहनी ॥ ॥ इवने सगुण माहनी छाया ॥ का
 मानी सगुण माहनी काय ॥ ॥ देव या अहिष क काय ये न सगुण
 माहनी नति य ॥ इवने देव या क केत के का सथा द स्थान काय को मानी
 या स्थान उता पंथ मते काय भव या न वि य ॥ ॥ न्यास लिकाय ॥ कां
 रु शा र्या नमः ॥ ॥ दिक ना न्यास ॥ काह दया दि अ न्यास या य
 ८ द कित काय ॥ देव जा प य के ॥ ८

॥ ॥ को मानी विसर्जन ॥ ॥ को मानी यथा ग कि पू जिता सि कम स ॥ ॥ वि
 लि विसर्जन ॥ अमु य रुद्र के कतन ॥ सी हान मू डा न व लि (थाय ॥
 गित त्वने वृत्तं ना सिय ३ ॥ ॥ धाम मगुल (थ से ॥ सूर्य सा कि ॥ हान
 दा न (गा रु ग्री ग्वन दा स ॥ सर्व ग रु क य ध ना दि ज य पा पि कां म ॥ सा
 न दी य म हाने वमी पा व व्र गी स रु द व ता दि गी उ ग व भु पू जा सा रु
 तार्थ गी को मानी जा ग पू जा से पू र्णु र्थ कृत क र्मा सा कि (ला गी सूर्य य
 अ र्थ नमः ॥ पू र्थ नमः ॥ ॥ धूप दी प त र्प्य को मानी रु थ का वि न कि नि
 न मूल स्थान स र्जन ॥ ॥ इहा वने मास का धूर्न के क र्त्त का र्त्त ॥ ॥ ॥

कोमात्रीपूजाविधिः समाप्तः ॥ ॥ अथ महादममापूजाविधिः ॥ ॥ अथ महादममापूजाविधिः ॥ ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ अथ महादममापूजाविधिः ॥ ॥ दममापूजाविधिः ॥
नादिलेकमधूनकाडा ॥ ॥ देवकुलजाते ॥ वज्रिहोयानवलिआदिमा
लकातने ॥ ॥ देवस्नानं येषामृतादिनयावक ॥ वेन्दनसिद्धनश्रुत
रुद्रमकास्नानश्रादिनमालकखिले ॥ ॥ अथ पूजा ॥ जलभावनं ॥ जि
नत्वनकवर्धनासिय ॥ ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ अथत्यादि ॥ रुद्रद्वारागमगुह्य
भवेदासः सर्वगुरुकयधनादिजयप्राप्तिकामः सानदीयमहादममापूजा
वर्धनीसुखदवतादिगीर्णवधुपूजानिमित्तार्थकर्तुं श्रीसूर्यार्घ्य
नमः ॥ पूजनमः ॥ ॥ वलानुकमसायाडापनियदाकर्तुं पूजायाका

ॐ पूजानं गमक ॥ मूल उग्र वल्लु कल गमक मया ह क पूति हाव गुलि स्थान न
गमक ॥ यत्र (म) यया न आसन रुया पूलि उव लि मूडा थान नं गमक ॥ रुत
सा अरि पूजा या दा ॐ विस्तान गुलि पूजा या ये न व ॥ मस्तान सा स्य स्थे न
गमक ॥ ॥ महा हरी मी स पूजा या का देव द का स या पूजा या ये माल आसन
रुया पूलि व लि मूडा श कान या य ॥ ॥ गुनू या उ य द म ॐ माल क पूजा
या य रु य स्त रु त्व धून क ॥ ५ ॥ वा क न स म य न्या द्वा य ॥ ॥ गुनू न यो र्
या य गुनू पा रु न ॥ जे स्ता हा गी त आ न न ना थ गी पूर्णु ल आ सा गी पा इ का न
र्य या मि २ ॥ जे न श्री राज ना थ प रा प न गुनू गी पा इ न र्य ४ ॥ जे स्ता हा वि
३ द कि सा न्वा य द्वा य स क ल स्थे न ३

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥